



UnderStand UPSC
What we Understand, We Conquer

CONQUER MAINS 2027

UPSC 2024/25 में 200+ रैंकर देने वाला एकमात्र प्रोग्राम

सामान्य अध्ययन 1:
आधुनिक भारत
संक्षिप्त नोट्स



Satyam Jain

(3 UPSC CSE Interviews, Mentor to 300+ Rankers
Including AIR-1, Published Author)



Call For More Info
8377072252



Ground floor, 11B, Bada Bazar Road, Old Rajender Nagar, New Delhi - 110060



understand.upsc



UnderStandUPSC.com



: UnderStand UPSC

* आधुनिक इतिहास *

01. भारत में यूरोपीय शक्तियों का आगमन

- ✓ पुर्तगाली (1498) ✓ अंग्रेज (1600)
- ✓ डच (1602) ✓ फ्रांसीसी (1664) ✓ डेनिश

॥ औपनिवेशिक शक्तियों के भारत आने के कारण :-

- 1) व्यापार से लाभ कमाना
- 2) मसालों (भांस संस्करण) माँग
- 3) व्यापार हेतु कच्चा माल
- 4) पिछासी
- 5) औपनिवेशिक आकांक्षा
- 6) किचोलियों समाप्ति
- 7) ईसाई धर्म प्रसार

॥ पुर्तगाली -

- 1) वास्को डी गामा - 1498 - केंद्री (कन्नौर)
- 2) कैप्टल - 1500 में सूरत केंद्री
- 3) अल्मेडा - ब्लू वॉटर पॉलिसी (काठज प्रणाली)
- 4) अल्बुकर्क - 1510 में गोवा पर अधिकार
- 5) कुन्ही - मुख्यालय कोचिन से गोवा।

॥ पुर्तगालीयों का योगदान -

- 1) नई कसले एवं फल [तेबकू, पपीता]
- 2) ईसाई धर्म प्रचार (चर्च, लैटिन रीति)
- 3) प्रिंटिंग प्रेस [प्रथम: 1st गोवा (1556)]
- 4) व्यापार - कला [गोथिक, रोकोको शैली]
- 5) समुद्री तकनीक विकास
- 6) पुर्तगाली भाषा के अनेक शब्द भा. भाषाओं में आए।
- 7) अल्बुकर्क ने स्थानीय महिलाओं से विवाह की प्रेरणा दित किया।
- 8) नौसेना, सैन्य तकनीक व तोपखानों का विकास
- 9) मसाला उत्पादन की वृद्धि।

॥ पुर्तगाली पतन के कारण -

- 1) विश्व में शक्तिशाली राष्ट्रों का उदय
- 2) राष्ट्रनीतिक व आर्थिक तनाव
- 3) अंग्रेजों तथा डचों जैसे यूरोपीय प्रतिस्पर्धी
- 4) भ्रष्टाचार व अर्थव्यवस्था
- 5) व्यापार पर अधिक ध्यान देना
- 6) गोवा में आर्थिक उत्पीड़न।
- 7) बेसीन, सोलसेट क्षेत्रों का नुकसान।

॥ डच :-

- 1) 1596 - कॉर्नेलिस डी हाउटमैन आगमन।
- 2) मुख्य रूप - इंडोनेशिया द्वीपसमूह एवं मसाला व्यापार।

- 3) प्रमुख केंद्रीय - पोटापुली, मदलीपटनम, विमलीपटनम।
- 4) अंग्रेज - डच प्रतिद्वंद्विता -
1667 संधि → डचों ने भारत छोड़ा ✓
दुगली युद्ध (1750) → 1795 तक पूरी निष्क्रियता

॥ अंग्रेज [इस्ट इंडिया कंपनी - 1600]

- 1) पहली केंद्री - मदलीपटनम (1611)
- 2) बाद में - बंबई, मद्रास, कलकत्ता।
- 3) 1715 - फर्स्टवसियर का फरमान।
- 4) रॉबर्ट क्लाइव → उत्कृष्ट सैन्य नेतृत्व
[प्लासी युद्ध] → बंगाल में ईंग्लिश शासन।
[इलाहाबाद संधि] → प्रशासनिक सुधार।

॥ फ्रांसीसी [1664] केंद्रीय → पॉइचेरी, सूरत, कलकत्ता आदि।

- ✓ केंद्रीय डचले प्रथम फ्रांसीसी (गवर्नर)

॥ फ्रांसीसीयों का योगदान -

- 1) फ्रांसीसी भाषा-शिक्षा
- 2) शास्त्री नियोजन, वास्तुकला [ब्रिजरोड, नव-शास्त्रीय शैली]
- 3) ईसाई धर्म (कैथोलिक) प्रसार
- 4) सैन्य संगठन व रणनीति
- 5) सांस्कृतिक प्रभाव - भोजन, पहनावा, रीति-रिवाज [पॉइचेरी-खिलिफ्रांसी]
- 6) कानून व प्रशासनिक व्यवस्था।

॥ आंग्ल - फ्रांसीसी प्रतिद्वंद्विता के कारण -

- 1) व्यापारिक प्रतिस्पर्धी
- 2) यूरोप की औपनिवेशिक प्रतिद्वंद्विता [ऑस्ट्रियाई उत्प्रेरण, सप्त सप्त वर्षीय युद्ध]
- 3) भारत में क्षेत्रीय महत्वकांक्षा
- 4) सैन्य श्रेष्ठता व किताबें
- 5) नौसैनिक प्रभुता।

॥ आंग्ल - फ्रांसीसी प्रतिद्वंद्विता के परिणाम -

- 1) प्रथम कर्नाटक युद्ध (1740-48) → सूरत-रांपैल संधि [1749]
- 2) द्वितीय कर्नाटक युद्ध [1749-54] → मनीरवाग्विक।
- 3) तृतीय कर्नाटक युद्ध [1758-63] → वॉर्जीवार युद्ध (1760) [पेरिस संधि (1763)]

॥ फ्रांसीसीयों की पराजय के कारण -

- 1) राज्य का अधिक नियंत्रण → प्रिंसिपल निर्णय घीमे
- 2) कमजोर नौसेना
- 3) केवल एक आधार पर निर्भरता।
- 4) योग्य सेनापति कमी
- 5) धन की कमी
- 6) श्र. नेतृत्व, मनीक्ल की कमी।

॥ अंग्रेजों की सफलता के कारण :-

1. निजी कंपनी से → नौकरशाही निर्माण में देरी नहीं
2. शास्त्रिणी नौसेना व रणनीतिक वैदग्ध्य
3. व्यापार - विस्तार के बीच संतुलन
4. अकुल नेतृत्व, सैन्य रुमान (5) औद्योगिक क्रांति के लाभ
6. भारतीय शासकों से गठबंधन
7. डिसाई धर्म के प्रचार की लेकर अपेक्षाकृत कम उत्साह।

॥ भारत में प्रचलित परिस्थितियाँ -

॥ राजनीतिक -

1. मुगल साम्राज्य का पतन (औरंगज़ेब मृत्यु, 1707)
2. क्षेत्रीय राज्यों उदय (उत्तराधिकारी स्वतंत्र राज्य)
3. क्षेत्रीय राज्यों मध्य लगातार युद्ध
4. विदेशी आक्रमण - नादिर शाह (1739), अहमद शाह अब्दाली (1761)
5. राष्ट्रीय एकता का अभाव
6. यूरोपीय सैन्य श्रेष्ठता

॥ आर्थिक -

1. आर्थिक असमानता
2. कृषि पद्धतियों में षड्यंत्र
3. डिस्को की लागत
4. व्यापक आयात - निर्यात
5. निर्यात - उन्मुख विदेशी व्यापार
6. औतरित व्यापार में बाधाएँ

॥ सामाजिक -

1. कमजोर समाज
2. जाति पंचायतें
3. फी प्रथा
4. मुसलमानों : सामाजिक विभाजन व्यवस्था
5. मिश्रित (हिन्दू - मुस्लिम) संस्कृति
6. धार्मिक सहिष्णुता (7) पितृसत्तात्मक व्यवस्था
8. सामाजिक कुरीतियाँ - सती, दहेज, (9) बाल विवाह

॥ शिक्षा -

1. परम्परागत एवं पुरानी शिक्षा
2. तर्कसंगत चिंतन का अभाव
3. मौखिक विचारों का अभाव
4. रटने की पद्धति
5. महिला शिक्षा अभाव
6. शिक्षकों को उच्च सामाजिक सम्मान प्राप्त था।

॥ संस्कृति -

1. नाट्यकीर्त (केरल) - मार्तण्ड वर्मा; मलयालम, साहित्य का पुनर्जागरण
2. अवध (लखनऊ) - उर्दू साहित्य, कला - संगीत - नृत्य का विकास
3. बाद वर्षों में जाति प्रबन्धों का पतन
4. स्थापत्य कला - इमामबाड़ा, जयपुर आदि
5. संगीत - मुहम्मद शाह के सूरदास में
6. कविता - यौगिक, निराराधनी, वास्तविक जीवन से दूर

7. पंजाबी भाषा - हरि राँसा (वारिस शाह)
8. विज्ञान - प्रौद्योगिकी में षड्यंत्र
9. सांस्कृतिक गतिविधियाँ - में कमी।

॥ ब्रिटेन का उदय -

- “एक हाथ में बाइबिल, दूसरे में तलवार और पीठ पर व्यापारिक थैला।”
1. मुगल साम्राज्य पतन, क्षेत्रीय राज्यों से व्यापारिक विस्तार
 2. ईस्ट इंडिया कंपनी ने औतरित विभाजनों का लाभ लिया → सैन्य विजय, संधियाँ, राजनीतिक चालें।

॥ मुगल साम्राज्य का पतन :-

1. औरंगज़ेब : कठोर शासन
2. कमजोर उत्तराधिकारी एवं अमीरों का पतन
3. विदेशी कमजोरी
4. मराठों का उदय (पेशवा - बाजीराव)
5. सैन्य कमजोरी (सामंती सेना)
6. विशाल साम्राज्य व क्षेत्रीय राज्यों पुनर्जाति
7. औरंगज़ेब की पक्कन नीति
8. नादिर शाह का 1739 का आक्रमण

॥ क्षेत्रीय शक्तियाँ एवं ब्रिटिश सुदृढीकरण -

1. मैसूर → सहायक संधि
2. हैदराबाद → सहायक संधि
3. मराठा → आंग्ल - मराठा युद्ध
4. पंजाब → 2. आंग्ल - सिख युद्ध
5. अवध → कुशासन सिंहात

॥ ब्रिटिशों द्वारा विलय हेतु अपनाई गई नीतियाँ :-

1. लैप्स का सिंहात - लॉर्ड डलहौजी
2. [सतारा, सैबलपुर, उदयपुर, झाँसी, नागपुर]
3. सहायक संधि → लॉर्ड क्लैपली. [हैदराबाद, अवध]
4. रिंग चेंस नीति → वॉरेन हेस्टिंग्स : अफगान - आंग्ल युद्ध बाद
5. प्रत्यक्ष नियंत्रण नीति (अफगान - आंग्ल युद्ध बाद)

॥ भारत में ब्रिटिशों के एकमात्र विदेशी शक्ति के रूप में उभरने के कारण -

1. मजबूत नौसैनिक शक्ति (पंडीवाश युद्ध)
2. ईस्ट इंडिया कंपनी रणनीति - लाला, बम्बर
3. भारतीय राज्यों के आपसी मतभेद का लाभ उठाया
4. यूरोपीय प्रतिद्वंद्वियों की पराजय (फ्रांसीसी) (मराठा)
5. कुशल प्रशासन व शास्त्रिणी सेना (कंगारु सेना)
6. आर्थिक संसाधन (ब्रिटेन, बंगाल)
7. ब्रिटिश गृह सरकार द्वारा आर्थिक समर्थन

02. ब्रिटिश औपनिवेशिक नीतियाँ

ॐ आर्थिक नीति -

"ब्रिटिशों ने भारत की संपत्ति और संसाधनों का उपयोग भारत के विकास हेतु नहीं बल्कि अपने साम्राज्यवादी हितों के लिए किया -"
✓ दादाजी नौरोजी

तीन चरण -

① वाणिज्यवादी चरण (1757-1813)

भारत की संपत्ति, कच्चे माल का उपयोग ब्रिटेन की औद्योगिक क्रांति हेतु
 (भारत का कच्चा माल की आपूर्तिकर्ता बन गया)
 (बनामाल हेतु भारत व्यापार के रूप में)
 (घन निकासी व व्यापार स्काधिकार)

② औद्योगिक पूँजीवाद चरण (1813-1858)

भारत में योजनाबद्ध औद्योगिक पतन
 पश्चिमीकरण (60% मूल्यमूल उद्योग पतन)
 औद्योगिक पतन, मुक्त व्यापार

③ वित्तीय पूँजीवाद चरण (1858-1947)

संसाधनों के दोहन, लाभ कमाने हेतु
 ब्रिटिश पूँजी का आधारभूत संरचना में निवेश
 कच्चे माल का अधिकाधिक दोहन तथा
 ब्रिटिश व्यापार बढ़ावा (रेलमार्ग, नहर, बंगाल)
 आधारभूत संरचना का विकास मुख्यतः
 संसाधन दोहन हेतु

ॐ विभिन्न क्षेत्रों पर प्रभाव -

अ) कृषि उद्योग -

① औद्योगिक क्रांति → बेरोजगारी ① (60% मूल्यमूल उद्योग पतन)

② मुक्त व्यापार नीति (ब्रिटिश अधिनियम, 1813)

- ब्रिटिश कपड़ों पर आयात शुल्क ×
- बंगाल के बुनकरों की अजीबगी समाप्त (~ 6 लाख से 1 लाख रह गए)

③ भारत के कस्बों पर ब्रिटेन में भारी आयात शुल्क : वैश्विक व्यापार की हानि → निर्यात ↓

④ पवरन व्यवसायीकरण व कच्चे माल का दोहन → पारंपारिक स्तरित्व का विनाश
 • बेरोजगारी ① → लोग कृषि छोड़ कर

⑤ कपास → ब्रिटेन के मैनचेस्टर मिलों को भेजी गयी

- शुल्क - मुक्त आयात का प्रमुख

⑧ व्यापार -

① भारत की औपनिवेशिक व्यापार प्रणाली में पवरन शामिल किया गया

② भारतीय उद्योग अतिक्रमित रह गये

③ घन निकासी : होम-मार्केट, सैन्य व्यय

④ भारतीय अक्षरानी व व्यापारी की का विनाश

⑨ कृषि -

① खाद्यान कसलों की जगह नकदी फसलें

② स्थायी बैदोबस्त व ऊँचे भू-राजस्व भाँटा
 हुदा : बंगाल अकाल (1943)

③ कृषि व्यवसायीकरण (अकीम, नील खेती)

④ जमींदार - महारजों द्वारा शोषण

⑤ कृषि अधिष्ठाता की निकासी

⑥ सिंचि, आधारभूत संरचना की उपेक्षा

⑩ आधारभूत संरचना -

① कच्चे माल एवं सैनिकों की तेज आवाजगी

② संसाधनों के दोहन हेतु रेलमार्ग

③ राजनीतिक - प्रशासनिक नियंत्रण

④ आधारभूत संरचना से प्राप्त लाभ ब्रिटेन में जा

⑤ नहरों का उपयोग मुख्यतः व्यावसायिक फसलों हेतु

ॐ भू-राजस्व नीतियाँ -

① स्थायी बैदोबस्त : लॉर्ड कॉर्नवालिस →

→ बंगाल, 1793 (ब्रिटिश क्षेत्र का ~ 19%)

→ जमींदार भूमि के स्वामी बने

→ निश्चित कर

→ उपभूस्वामित्व एवं अनुपस्थित जमींदारी

→ किसानों के अधिकार जमींदारों के स्थानांतरित

→ कृषकों के परंपरागत अधिकार समाप्त

→ जमींदारों द्वारा अत्यधिक लगान, शोषण व दंड

② रेंजतवशी व्यवस्था - (मुन्नी व रीड)

→ सीधे रेंजतसे समझौता

→ ब्रिटिश क्षेत्र का ~ 51%

→ भू-राजस्व 40(45-50%) तक (वेदी)

→ 1864-78 का मद्रास अकाल

③ महालवादी व्यवस्था (उत्तर भारत, 1822)

→ "महल" से समझौता

→ निर्धनता व विस्थापन

→ 1857 के विद्रोह का कारण

⑥ ब्रिटिश साम्राज्य की आर्थिक आलोचना -

① दादाभाई नौरोजी - "धन निकासी सिद्धांत"
[पॉपर्टी एंड अन-ब्रिटिश रूल इन इण्डिया]

② आर. सी. टट - भूमि राजस्व, अकाल, कृषि पर अध्ययन

"फैट" द इकोनॉमिक हिस्ट्री ऑफ इण्डिया

③ एम. सी. रनौड - औद्योगिक पतन
"स्ले ऑन इण्डियन इकोनमी"

④ गोपाल कुम्भ गोखले - सैन्य व्यय, करो पर बैर
[इंपीरियल लेप्सिस्टेलि काउंसिल में बंपट प्राध्यापक]

⑤ महात्मा गांधी - "हिंद स्वराज्य"

⑥ धन निकासी -

दादाभाई नौरोजी : "इंटरनेशनल डेट टू इण्डिया"

"भारत में ब्रिटिश साम्राज्यवाद ने स्वदेशी उद्योगों एवं कृषि को नष्ट किया तथा ऐसा व्यापारिक एकाधिकार स्थापित किया जिसने भारत की संपत्ति को बिना पुनर्निवेश के बंधन में रखा, जिससे गरीबी, निर्धनता बढ़ी"
- कार्ल मार्क्स

घटक -

- ① ब्रिटिश अधिकारियों द्वारा धन प्रेषण
- ② होम चार्जिस
- ③ सार्वजनिक ऋण पर व्यापार
- ④ ब्रिटिश कंपनियों का लाभ
- ⑤ समकक्ष आयातों का अभाव

प्रभाव - ① भारतीय अर्थव्यवस्था का बहाराव
② गरीबी - अकाल ③ उद्योगों का पतन
④ कृषि पर अत्याधिक निर्भरता ⑤ राजस्व का उदय

ब्रिटिश आर्थिक नीतियों की स्थानात्मक विरासत -

- ① रेलवे कानून ② वार्षिक कृषि विकास
- ③ आधुनिक बैंकिंग प्रणाली ④ संख्यागत उधार
- ⑤ कानूनी, संपत्ति संबंधी ढांचा ⑥
- ⑦ वैदरगाट - व्यापारिक अवसर संचयना,

"भारत को इस प्रकार मिश्रित किया जा रहा है कि, बाहर से भारतीय रूल की एक छेड़ भी दिखाई नहीं देती"
- (दादाभाई नौरोजी)

⑦ रेल, टेलीग्राफ, व्यापार -

↳ ब्रिटिश अर्थव्यवस्था तथा प्रशासनिक नियंत्रण को सुगम बनाया।

⑧ रेलवे : (मील = 5 लक्षों की), जयमरेल = बॉम्बे से ठाणे (1853)

⑨ सकारात्मक प्रभाव -

- ① राष्ट्रीय एकीकरण, संपर्क, गतिशीलता
- ② औद्योगिक व्यापार ③ अकाल समय सहायता
- ④ कच्चे माल में कृषि परिवहन सुविधा

⑩ आपनिवेशिक उद्देश्य -

- ① आर्थिक एवं प्रशासनिक आवश्यकता की पूर्ति
- ② सैनिक को आवाजाही
- ③ कच्चे माल का निर्यात
- ④ ब्रिटिश व्यापार के लिए अनुकूल किराया एवं मालभाड़ा

⑪ भारतीय हितों की उपेक्षा -

- ① अधिक किराया व मालभाड़ा ② भारतीय स्वमित्व को हितसाधित करना
- ③ मुख्य पदों पर ब्रिटिश अधिकारियों की नियुक्ति

⑫ टेलीग्राफ -

→ 1839 : विलियम ओ'रॉघनेसी द्वारा 30 मील की प्रायोगिक टेलीग्राफ लाइन (कलकत्ता बॉटनिक्ल गार्डन)

→ 1855 : 5 लक्षों की समय लगभग 3000 मील का नेटवर्क।

* 1857 के विद्रोह में भूमिका -

- समाचार व सैनिकों की तेज संचार व्यवस्था
- त्वरित समन्वित प्रतिहिंसा।

* अन्य उपयोग

रणनीतिक एवं प्रशासनिक उपयोग
शासन पर अधिक नियंत्रण एवं बेहतर प्रशासन सुविधा सूचनाओं का आदान-प्रदान
व्यापारिक संचार को बढ़ावा।
कानून व्यवस्था

* ब्रिटिश शासन के अंतर्गत शिक्षा का विकास

* उद्देश्य - ① प्रशासनिक दक्षता (विल्सली - फोर्ट विलियम कालेज)

- ② कम लागत में शासन
 - ③ आर्थिक शोषण - ऐसे कुशल कर्मचारी तैयार करना जो, ब्रिटिश हितों की सेवा करें।
- "रक्त और रंग से भारतीय, लेकिन रूप, विचार और बुद्धि से अंग्रेजी"
(उनके फिलिप्स सिद्धांत)

(4) सांस्कृतिक प्रभुत्व (सभ्यता मिशन)

मैकॉले; एक अच्छी यूरोपीय पुस्तकालय की...

(5) राजनीतिक नियंत्रण [ब्रिटिश शासन के प्रति निष्ठावान मानसिकता विकसित करना]

• भारतीय विश्वविद्यालय अधिनियम, 1904 → विश्वविद्यालयों पर सरकारी नियंत्रण।

(6) अंग्रेजी भाषा का प्रसार [कुइस डिस्पेंच]

(7) दीर्घकालिक साम्राज्यवादी हित

(8) बार्मिड एवं मिशनरी उद्देश्य [चार्टर अधिनियम, 1813]

ओरिएंटलिस्ट

एंग्लिसिस्ट

(1) पारंपरिक भारतीय शिक्षा (1) आधुनिक शिक्षा का समर्थन।

(2) विलियम जेम्स, जेनायन (2) जेम्स मिल, टी. के. मैकॉले।

• विलियम बेट्टिन्ग ने मैकॉले के विचारों का समर्थन किया।

① समर्थन में तर्क -

(1) आधुनिक शिक्षा का परिचय (प्रेसीडेंसी कॉलेज)

(2) शिक्षित मध्यम वर्ग का निर्माण (राणा राममोहन राम)

(3) विश्वविद्यालयों से संस्थानों स्थापना (सेण्ट्रल बोर्ड)

(4) अंग्रेजी भाषा प्रसार

(5) सामाजिक सुधारों को समर्थन [ब्रह्मसमाज]

(6) व्यावसायिक शिक्षा पर बल [हॉर आयोग]

(7) महिला शिक्षा पर बल [1913 का सरकारी शिक्षा प्रस्ताव]

(8) शिक्षा, पाठ्यक्रम का मानकीकरण (हॉर)

(9) कृषि, साहित्य का विकास (हॉर)

② स्थैतिक कवरेज :

(1) वॉरेन हेस्टिंग - कलकत्ता मद्रास, जेनायन उकन - सेंट्रल कॉलेज, वेल्सली - फोर्ट विलियम कॉलेज।

(2) चार्टर अधिनियम, 1813:

✓ मिशनरियों को अनुमति ✓ 1 लाख ₹ शिक्षा हेतु
✓ सेंट्रल कॉलेज - कलकत्ता, अग्रा, दिल्ली

(3) मैकॉले का मिनट (1835): एंग्लिसिस्ट मॉडल
✓ डाउनवर्ड फिल्ट्रेशन सिद्धांत।

(4) कुइस डिस्पेंच (1854): भारतीय शिक्षा में - कार्य।

✓ राज्य नियंत्रण ✓ शिक्षा पदानुक्रम ✓ धर्मनिरपेक्ष शिक्षा

✓ अंग्रेजी → उच्च शिक्षा, स्थानीय भाषा - विद्यालय

✓ महिला - व्यवहारिक शिक्षा।

• अनुदान सहायता द्वारा निजी क्षेत्र को उत्साहना।

(5) हॉर शिक्षा आयोग [1882-83]:

→ प्राथमिक शिक्षा का नियंत्रण स्थानीय निकायों का

→ माध्यमिक शिक्षा - साहित्यिक एवं व्यावसायिक।

(6) भारतीय विश्वविद्यालय अधिनियम, 1904:

→ अध्ययन व अनुसंधान पर बल।

→ फैलो की संख्या में कमी।

→ सरकारी नामांकित संस्थानों की संख्या (↑)

→ विश्वविद्यालयों पर सरकारी नियंत्रण।

→ 5 लाख वर्ष 5 वर्ष के लिए उच्च शिक्षा पर व्यय

(7) सेण्ट्रल विश्वविद्यालय आयोग (1917-19)

→ 12 वर्ष की स्कूली शिक्षा

→ विश्वविद्यालयों के कठोर नियमों में कमी।

(8) हॉरिंग समिति (1929) -

→ विविधीकृत पाठ्यक्रम

→ पुनर्स्थापित पाठ्यक्रम तथा शिक्षक परिषद पर बल।

महिलाओं की शिक्षा के लिए उपाय :

(1) कुइस डिस्पेंच (1854) → महिला शिक्षा को उत्साहना।

(2) 1854 → वेल्सली स्कूल की स्थापना।

(3) हॉर शिक्षा आयोग - प्रेसीडेंसी नगरों के बहर भी महिला शिक्षा का विस्तार।

(4) शिक्षा नीति पर सरकारी प्रस्ताव, 1913:

• व्यवहारिक पाठ्यक्रम

• अधिक महिला शिक्षकों की नियुक्ति

(5) हॉरिंग समिति (1929) - स्वच्छता, गृह विज्ञान व खेल पर बल।

(6) उदाहरण -

(1) मेस्वले का शिक्षा प्रस्ताव (1910) तथा वर्धा वैंगल नेशनल कॉलेज (1906) की बुनियादी शिक्षा योजना

(2) 1847 - रुड़की इंजीनियरिंग कॉलेज।

1856 - कलकत्ता इंजीनियरिंग कॉलेज (ब्रह्मा कृषि संस्थान)

(3) ब्रिटिश शासन के अंतर्गत शिक्षा (1919) - विषय प्रणाली को हस्तान्तरित

(4) भारतीय विश्वविद्यालय अधिनियम, (1904) - तत्कालीन प्रान्त में विश्वविद्यालय।

प्रश्न भारतीय शिक्षा की वर्तमान संस्था एवं कार्यप्रणाली में ब्रिटिश औपनिवेशिक शिक्षा की विरासत किन-किन रूपों में प्रकट होती है ?

[उत्तर प्रारूप : ब्रिटिश कालीन व्यवस्था → नई शिक्षा नीति (NEP) 2020 के सुधार]

① अंग्रेजी माध्यम - मातृभाषा/क्षेत्रीय भाषा को कक्षा 5-8 तक बढ़ाया।

② परीक्षा-केन्द्रित प्रणाली - दक्षता - आधारित शिक्षा, आलोचना -

समग्र रिपोर्ट कार्ड।

③ पदानुक्रमीय संरचना (जायमिड - विश्वविद्यालय) → 5+3+3+4 संरचना

④ विश्वविद्यालय केन्द्रित मॉडल → स्वायत्त महाविद्यालय एवं बहुविषयक विश्वविद्यालय।

⑤ नौकरशाही नियंत्रण - किन्हींकरण एवं स्थानीय शासन।

⑥ सिविल सेवा उन्मुख शिक्षा - व्यापक करियर पैथवे।

⑦ व्यावसायिक शिक्षा अपेक्षा - कक्षा 6 से व्यावसायिक शिक्षण।

⑧ शाली - ग्रामीण शिक्षा विभाजन - डिप्लोमा एवं आचार्यभूत ढांचे का उन्मूलन।

⑨ प्राथमिक शिक्षा की अपेक्षा → बहुभाषिकता ①

⑩ अनुसंधान एवं विचार में कम निवेश → उच्च शिक्षा संस्थानों में अनुसंधान एवं NER

मूल्यंकन :-

① अंग्रेजी शिक्षा का प्रसार घीमा रहा।

② पारंपरिक विचारों का प्रसार हुआ, परंतु अभिजात वर्ग तक सीमित रहा।

③ ~~एक~~ - ~~संस्कृत~~ - ~~टैक~~ [यह मानवीय मूल्यों/विषयों में की अपेक्षा बढ़ाया।]

④ औपनिवेशिक शिक्षा का उद्देश्य ब्रिटिश साम्प्रदायिक नियंत्रण को मजबूत करना था।

॥ ब्रिटिश शासन के अधीन सिविल सेवाओं का विकास :-

① औपनिवेशिक शासन के स्तंभ के रूप में सिविल सेवा - ① राज्यसंग्रह (स्थायी बंदोबस्त)

② कानून एवं व्यवस्था बनाए रखना (1857 के विद्रोह के बाद EC की भूमिका)

③ प्रशासनिक नियंत्रण एवं शासन।

④ औपनिवेशिक शासन को बंध ठहराना (सम्यक्त विचार)

⑤ साम्राज्य का सुदृढ़ीकरण (पंजाब में ग्लोबल ब्रायोज आदि)

⑥ ब्रिटिश शक्ति को मजबूत करना।

⑦ सैनिक प्रबंधन (बॉम्बे स्लेग)

⑧ विद्रोह का दमन (झांझा विद्रोह आदि)

⑨ प्रशासनिक प्रक्रियाओं का मानकीकरण (जनगणना, I.P.C.)

⑩ स्वतंत्र भारत की नौकरशाही नींव

① नस्ली भेदभाव एवं विविधतावाद।

② कॉन्वेंटेड सेवाएं

③ सांस्कृतिक अस्वैयंशीलता एवं जनता से दूरी [1770 के बंगाल अकाल में मीराजस्य-वसुली]

④ भ्रष्टाचार एवं भ्रष्ट - भ्रष्टाचारवाद उपाकरण - ज्ञान भैरवर्जन

⑤ स्थानीय आवश्यकताओं से कटाव (ब्रिटिश प्रशासित अधिकारी)

⑥ भारतीयों के लिए अवसरों की कमी (जनगणायर)

⑦ दमन का प्रमुख साधन।

⑧ स्थानीय संस्थानों को कमजोर करना।

• मद्रास में कलेक्टरों ने लगभग 80% ग्राम पंचायतों का स्थान लिया।

⑨ लिलन द्वारा आयु सीमा घटाई - तिलक ने इसे "दमन का इस्पाती ढांचा" कहा।

सिविल सेवा सुधार -

① कॉन्वेंशनल की भूमिका - वरिष्ठता आधारित निष्पी व्यापार पर रोक।

② चट्टर अधिनियम, 1853 - खुली प्रतिस्पर्धी परीक्षा

③ आई.सी.एस. अधिनियम (1861) - उच्च पद कॉन्वेंटेड सेवकों के लिए, कानूनी सुरक्षा।

④ एचिसन लेब सेवा समिति (1886) - भारतीय एवं अधिनियम सेवाओं का वर्गीकरण : आयु लगभग 23 वर्ष।

⑤ मॉन्टेग्यू - चेम्सफोर्ड सुधार (1919) - भारत एवं इंग्लैंड में एक साथ परीक्षा।

⑥ ली आयोग (1924) - लोक सेवा आयोग (LSC) की स्थापना की सिफारिश; बतों का ऊँह अधिकतर प्रतीय सरकारों को : 15 वर्षी

में ICS में भारतीयों का 50:50 अनुपात।

- (7) भारत शासन अधिनियम, 1935: संघीय लोक सेवा आयोग (F.P.S.C.), प्रांतीय लोक सेवा आयोग (P.P.S.C.)

वर्तमान भारतीय नौकरशाही में ब्रिटिश विरासत -

1. संरचनात्मक निरंतरता (IAS, IPS)
2. केंद्रीकृत प्रशासन
3. लालफीतशाही, प्रतिस्पर्धायामकता
4. औपचारिकता - आधारित अर्थ (प्रतियोगी परीक्षाएँ)
5. शासन बनाम वनाम प्रजा की मानसिकता
6. कानून एवं प्रशासन की एकरूपता।
7. कानूनी एवं प्रशासनिक भाषा

औपनिवेशिक शासन के अद्यतन प्रेस:

1. राजनीतिक जागरूकता एवं प्रतिरोध का माध्यम
2. साम्राज्यवादी अन्याय को चुनौती देने वाली भारतीय अवाजों का मंच
3. प्रेस स्वतंत्रता और अभिव्यक्ति की स्वतंत्रता किसी राष्ट्र की जंम देती है और उसका पोषण करती है। (विमर्श)

भारतीय प्रेस का विकास -

1. प्रारम्भिक शुरुआत: छिन्नी का बंगाल जर्नल (1780)
2. विकास एवं विविधता: 1810 के दशक तक लगभग 140 समाचार पत्र, जिसमें 60 भाषाएँ थीं।
3. सेंसरशिप अधिनियम (1794), प्रेस ऐक्ट अधिनियम (1830)

भारतीय भाषाई प्रेस का उदय -

- स्वदेशी मित्र - तमिल
- संवादक: कौमुदी - बंगाली,
- रास्त गोफतार - गुजराती

राष्ट्रवाद के साधन के रूप में प्रेस -

- ✓ मराठा व मेसरी - लोकमान्य तिलक

जनकारी कानून -

- वर्नक्युलर प्रेस एक्ट (1878)
- द न्यूजपेपर एक्ट (1908)

प्रेस पर सरकारी नियंत्रण -

1. सेंसरशिप ऑफ प्रेस एक्ट (1794): (लॉर्ड वेलेवेली द्वारा लागू)

2. प्रकाशन से पहले सरकारी अनुमति आवश्यक

2. लार्सेलिंग रैगुलेशन (1823):

जॉन एडम द्वारा, लार्सेल अनिवार्य, 3 फरवरी - मिरात - उल - मरक्कार (राजा राम मोहन राय)

3. प्रेस एक्ट: 1835 - लार्सेलिंग व्यवस्था (X)
L चार्ल्स मैटकाफ को भारतीय प्रेस का भूमिदाल कहा जाता है।

4. रजिस्ट्रेशन एक्ट (1867):

- मुद्रक, प्रकाशन का नाम देना अनिवार्य
- प्रकाशन स्थल को जानकारी देना जरूरी
- प्रत्येक प्रति सरकार को भेजनी होती थी

5. वर्नक्युलर प्रेस एक्ट (1878):

- भारतीय भाषाओं के प्रेस पर नियंत्रण द्वारा
- सरकार मुद्रक एवं प्रकाशन से जमानत मांग सकती थी।
- बल्लभन पर कार्यवाही, अपील का अधिकार नहीं।
- 1882 में लॉर्ड रिपन द्वारा समाप्त।

6. न्यूजपेपर एक्ट (1908) -

- सरकार चितावनी दे सकती थी
- प्रेस जफत कर सकती थी, तथा 3 फरवरी की जफत कर सकती थी।
- 1921 में तेज बहादुर सप्रू समिति की सिफारिश पर समाप्त।

7. इंडियन प्रेस एक्ट (1931):

- सविनय अवज्ञा आंदोलन के बाद लागू
- सरकार को किसी भी ऐसे प्रकाशन को बंद करके की व्यापक शक्ति मिली थी औपनिवेशिक शासन की वैधता पर सन उठता है।

भारतीय राष्ट्रीय आंदोलन में प्रेस की भूमिका -

1. राष्ट्रीय चेतना का विकास [कैदारी]
2. जनता को शिक्षित करना एवं संगठित करना
3. औपनिवेशिक अन्याय का पर्दाफाश (जैसे: बंगाल विभाजन, रूलर बिल)
4. सामाजिक सुधारों का समर्थन (हरिजन, सुवाद कौमुदी)
5. सांस्कृतिक संरक्षण एवं पुनर्जागरण
6. महिला संश्लेषण

ब्रिटिशों द्वारा दमन के शासन के रूप में प्रेस : स्थानीय शासन की क्षमता व महत्व :

- ① औपनिवेशिक प्रशासन का शासन: (मद्रास क्रियर)
- ② खुफिया जानकारी व निगरानी
- ③ आर्थिक एवं व्यापारिक हितों की रक्षा: (कोलकाता)
- ④ ब्रिटिश शासन को वेद घेरना: (मद्रास क्रियर)
- ① राज्यस्व संग्रह व भूमि प्रबंधन
- ② कानून एवं व्यवस्था
- ③ विवादों का समाधान
- ④ सूचना एकत्र करना
- ⑤ बाढ़ में सुधारों की नींव
- ⑥ सार्वजनिक कार्य, स्वच्छता
- ⑦ साम्प्रदायिक नेतृत्व के लिए मंच देना

आलोचना:-

- ① सीमित पहुँच एवं अभिव्यक्त स्वतंत्रता
- ② व्यवसायिकता एवं निष्पक्षता का अभाव (मुहम्मद अली के कोमरेड के लेख)
- ③ ब्रिटिश हितों के प्रति सुकाव (वी.वर्हि धितामणि के नेतृत्व में द लीडर)
- ④ सनसनीखेजी एवं अतिशयोक्ति (1921 का एकीपी में लाठीचार्ज सम्बंधी लेख)

स्थानीय शासन की समस्याएँ -

- ① स्वायत्तता का अभाव
- ② नदलीय भेदभाव
- ③ सीमित जनप्रातिनिधित्व
- ④ संसाधनों का अभाव
- ⑤ भ्रष्टाचार, शोषण
- ⑥ शहरी पक्षपात
- ⑦ प्रशासनिक असमता
- ⑧ स्थानीय आवश्यकता की उपेक्षा

स्थानीय शासन :

03. जन - आधारित प्रतिरोध :

स्थानीय शासन का विकास : ग्लासी के मुह के बाद गाँव के मुखिया एवं जमींदारों का निर्माण कमजोर हुआ।

नागरिक, जनजातीय एवं किसान आंदोलन

- ① प्रारम्भिक प्रयास : ईस्ट इंडिया कंपनी द्वारा मद्रास नगर निगम (1687) की स्थापना
- ② रेगुलेशन एक्ट (1773) के बाद कंपनी अधिकारियों व ब्रिटिश राष्ट्रपति के अधीन

सामान्य विशेषताएँ :

- ① नेतृत्व - स्थानीय अभिजात वर्ग (करिमुद्दीन)
- ② स्वतः स्फूर्त एवं स्थानीय स्तर पर प्रभाव
- ③ पारंपरिक मुह शैली एवं गुरिल्ला (छानीती)
- ④ सामंत - विरोधी एवं औपनिवेशिक - विरोधी (पारका)
- ⑤ सीमित समन्वय एवं भविष्य की योजना अभाव
- ⑥ पुनरुत्थानवादी प्रवृत्ति (किसा मुंडा - रामराज्य)
- ⑦ अंग्रेजों द्वारा कठोर दमन (रम्पा)

- ⑧ मैड मेयो का प्रस्ताव (1870) - विकेंद्रीकरण
• वित्तीय विकेंद्रीकरण
• पिला बोर्ड एवं नगरपालिका समिति स्थापना

- ⑨ मैड टिफिन प्रस्ताव (1882) - स्थानीय शासन
• शहरी - ग्रामीण स्थानीय निकायों को बढ़ाया
• गैर - सरकारी सदस्यों को वहुमत
• सीमित भताधिकार • पिला बोर्ड की अध्यक्षता स्थानीय अधिकारियों के पास

- ④ विकेंद्रीकरण पर शाही आयोग (1906) -
• ग्राम पंचायतों को अधिक अधिकार, संसाधन
• उप - पिला बोर्ड का महत्व
• कुद कर संबंधी प्रतिबंध हटाए गए
• नगरपालिकाओं को प्राथमिक शिक्षा की जिम्मेदारी दी गयी।

- ⑤ मई 1918 का प्रस्ताव : स्थानीय निकायों को जनता का वास्तविक प्रतिनिधि बनने पर बला

- ⑥ भारत शासन अधिनियम, 1935 :
• प्रांतीय स्वायत्तता में वृद्धि
• स्थानीय स्तर पर चुनावों से जनप्रातिनिधित्व

नागरिक विद्रोह :

कारण - शोषणकारी कर व्यवस्था (कच्चा विद्रोह)
स्थानीय शासकों का विस्थापन (वेलु थम्पा)
धार्मिक व सामाजिक मामलों में हस्तक्षेप (संघासी विद्रोह)
आर्थिक शोषण व उद्योगों का विनाश
उदा: सूरत नमक आंदोलन
भ्रष्ट एवं दमनकारी शासन (संघासी)
जनजातीय भूमि व स्वायत्तता पर निष्पक्ष अतिक्रमण उदा: संघासी विद्रोह
सैन्य असंतोष व भेदभाव (वेल्लोर - विद्रोह)

प्रभाव - ① जन - असंतोष उष्णार डूभा
(सैन्यासी विद्रोह)

- ② औपनिवेशिक सत्ता को चुनौती (पाका)
- ③ राष्ट्रनीतिक चेतना जागृत (विजयनगर)
- ④ प्रशासनिक सुधार (रंगपुर विद्रोह)
- ⑤ भविष्य के प्रतिरोध आंदोलन (1857) को प्रेरणा मिली
- ⑥ अंग्रेजी दमन बहा (वेल्लोर विद्रोह)
- ⑦ संस्कृत को नींव पड़ी (सियाल विद्रोह)

जनजातीय विद्रोह :

कारण - ① भूमि हड़पना एवं वन आदिभों का हनन (कोल)

- ② साहूकारों द्वारा शोषण, मृग बेचक उदाः
सियाल झूल बनाम दिरू
- ③ पारंपरिक जनजातीय अर्थव्यवस्था का विनाश (रम्पा)
- ④ जनजातीय स्वशासन (कुंदा उलगुलान)
- ⑤ धार्मिक - सांस्कृतिक हस्तक्षेप (तामा झगत)
- ⑥ पखरन भ्रम व शारीरिक उत्पीड़न (नील)
- ⑦ औपनिवेशिक न्याय व्यवस्था की विफलता (सियाल)
- ⑧ परिस्थितिक अवस्था एवं अजीबो-गिरी संकट (हो विद्रोह)

प्रभाव - ① कानूनी - संरचनात्मक सुधार (सियाल झूल)

- ② जनजातीय राष्ट्रनीतिक चेतना (उलगुलान → शाररवड आंदोलन)
- ③ औपनिवेशिक विरोधी प्रतिरोध का विस्तार (कोल → 1857)
- ④ राष्ट्रवादी विचारों को बल मिला (नेहरू की डिस्कवरी ऑफ इंडिया)
- ⑤ प्रशासनिक पुनर्गठन (अनुसूचित पिपला, अधिनि. 1874)
- ⑥ जनजातीय पहचान, संस्कृति संरक्षण
उदाः दौधनगपुर काश्तकरी अधिनिम (1900)
- ⑦ अनुसूचित जनजातीय की सुरक्षा (5वीं एवं 6वीं अनुसूची PESA)
- ⑧ आधुनिक जनजातीय अधिकार आंदोलनों को प्रेरणा मिली

उदाहरण : ① पहाड़िया विद्रोह, * 1857 के बाद
② कोल विद्रोह
③ सियाल
→ रामोसी
मुठहा विद्रोह

विज्ञान आंदोलन :

- कारण - ① औद्योगिकीय - राष्ट्रव्यवस्था।
(कक्कन दंगे (1875) - रंजितवही व्यवस्था विद्रोह)
- ② जमींदारों का अत्याचार एवं अवैध करों की वसूली (कक्कन दंगे (1873))
- ③ पखरन कृषिक कसलों की खेती (नील)
- ④ साहूकारों का शोषण एवं मृग बेचक (कक्कन दंगे)
- ⑤ कृषि का व्यावसायीकरण (चंपारण)
- ⑥ अकाल एवं औपनिवेशिक उदासीनता
- ⑦ पारंपरिक कृषक अधिकारों का हास (भूपिला विद्रोह)
- ⑧ नस्लीय एवं कानूनी असमानता (नील - विद्रोह)

प्रभाव - ① कृषि औषध्य उष्णार डूभा (नील विद्रोह)

- ② कानूनी सुधार हुए (बंगाल टैक्सि एक्ट)
- ③ राष्ट्रनीतिक चेतना बनी (विज्ञान समा आंदोलन 1935)
- ④ विज्ञानों का राष्ट्रीय आंदोलन से जुड़ा
- ⑤ औपनिवेशिक शासन की वैधता कमजोर
- ⑥ भविष्य के कृषि सुधारों को प्रेरणा मिली (1947 के बाद जमींदारी उन्मूलन)

उदाहरण : (1857 से पहले) : नर्वेल बेरिया, रंगपुर (बंगाल)
(1857 के बाद) : नील विद्रोह, विज्ञान समा आंदोलन

04. 1857 का विद्रोह :

- 10/मई/1857 : मेरठ में विद्रोह प्रारम्भ
- 11/मई/1857 : बहादुर शाह जफर ने नेतृत्व स्वीकार किया
- 30/मई/1857 : लखनऊ में विद्रोह प्रारम्भ
- 14/सितम्बर/1857 - अंग्रेजों ने दिल्ली पर कब्जा
- 11/जून/1858 - रानी लक्ष्मीबाई एवं तात्या टोपे ने ग्वाल्थर पर कब्जा
- 17/जून/1858 - रानी लक्ष्मीबाई की शहादत
- 1/नवम्बर/1858 - मद्रास की विद्रोहियों की धोखा

1857 की क्रांति :-

कारण - (A) राष्ट्रनीतिक :- (1) ब्रिटिश विस्तारवादी नीति।

(2) लॉस सिंहात (3) अवध का विलय।

(B) प्रशासनिक - (1) भ्रष्ट व अक्षम नौकरशाही

(2) भारतीय शासकों एवं अधिकारियों का दमन।

(3) अन्यायपूर्ण न्यायिक व्यवस्था।

(C) आर्थिक :-

(1) शोषणकारी भूमि - राष्ट्रस्व नीतियाँ

(2) धन का विकास

(3) उद्योगों का पतन।

(D) सामाजिक - धार्मिक -

(1) धार्मिक मामलों में हस्तक्षेप।

(2) ईसाई मिशनरियों की गतिविधियाँ

(3) नस्लीय भेदभाव (4) परचायीकरण।

(E) सैन्य -

(1) वेतन - भुविद्योगों में भेदभाव

(2) मत्तों में कटौती (3) जातिखोने के प्रयत्न।

(F) तात्कालिक कारण -

(1) एमर्जेंसी राबकल के कारतूस।

मुख्य नेता - (1) दिल्ली - बहादुर शाह जफर एवं वकील खाँ

(2) लखनऊ - बेगम हजरत महल।

(3) बीकानेर - राजा लक्ष्मीकांत।

(4) कानपुर - नाना साहेब, ताला टोपे।

(5) बरेली - खान बहादुर खाँ।

कमजोरियाँ - (1) सीमित क्षेत्रीय विस्तार

(2) संसाधनों (3) शिक्षित मध्य की भागीदारी।

(4) समन्वय व संगठन (5) आधुनिक हथियार।

(6) भा. सैनिकों का अंग्रेजों की समर्थन।

(7) अंग्रेजों की मजबूत सैन्य शक्ति, सहायता।

(8) जनसामान्य की सीमित सह समर्थन।

क्रान्ति की प्रकृति :-

(1) सिपाही विद्रोह :- जे. आर. सी. मजूमदार।

"यह न पहला राष्ट्रीय आंदोलन था, न राष्ट्रीय न ही स्वतंत्रता का युद्ध।"

(2) प्रथम स्वतंत्रता संग्राम -

• पीर विनायक दामोदर लावकर

• पुस्तक :- 'द इण्डियन वॉर ऑफ इंडिपेंडेंस'

• अंतरधार्मिक एकता

• सिपाहियों से आगे बढ़कर जनभागीदारी प्रेरणादायक आंदोलन।

(3) सामंती प्रतिक्रिया -

• मार्क्सवादी इतिहासकार : डी. एन. सा. पी. सी. जोशी।

• पदच्युत राजाओं, जमींदारों व सरदारों का विद्रोह

• उद्देश्य : पुराने विशेषाधिकारों की पुनर्स्थापना

• कारीगरों व किसानों की भागीदारी की अपेक्षा।

स्टेनली जैल्सफोर्ड : "यह केवल सिपाही विद्रोह से कहीं अधिक था, लेकिन प्रथम स्वतंत्रता संग्राम से कम था।"

(4) प्रभाव :- (1) ईस्ट इंडिया कंपनी के शासन का अंत

(2) आक्रामक विलय नीति का अंत

(3) भारतीय सेना का पुनर्गठन।

(4) भारतीय सैनिकों का अनुपात बढ़ाया (6:1 → 2:1)

(5) धर्म में हस्तक्षेप न करने की नीति।

(6) आधारभूत संरचना का विकास।

(5) सामाजिक - धार्मिक सुधार आंदोलन :-

उद्देश्य :- (1) सामाजिक कुरीतियों का उन्मूलन (राजा राममोहन राय - स्त्री प्रथा)

(2) शिक्षा प्रसार [सवित्रीबाई फुले]

(3) महिला सशक्तिकरण [इश्वरचन्द्र विद्यासागर - विधवा पुनर्विवाह]

(4) तर्कवाद व वैज्ञानिक सोच का विकास [जी. सखती]

(5) धार्मिक सहिष्णुता एवं एकता [ब्रह्म समाज]

(6) जातीय भेदभाव का विरोध [सत्यशोधक समाज]

(7) धार्मिक मूल्यों का पुनरुद्धार व सुधार [आर्य समाज]

(8) औपनिवेशिक हस्तक्षेप का विरोध [राजा राममोहन राय]

क्रान्ति के साधन :-

(1) शिक्षा व साक्षरता अभियान [हिंदू कॉलेज]

(2) लेखन व प्रकाशन [सैदाद कॉमिटी]

(3) सुधार आन्दोलन व संस्थाओं की स्थापना [ब्रह्म समाज]

(4) कानूनी सुधार, जनप्रमाण [इररुचंद बिहारी]

(5) सार्वजनिक बस, व्याख्यान

(6) सामाजिक सेवा, प्रत्यक्ष कार्य [पंडित सावरकर]

(7) धार्मिक संघों की नई व्याख्या [स्वामी विवेकानंद]

प्रश्न: क्या सामाजिक - धार्मिक सुधार आंदोलन भारतीय पुनर्जागरण था?

- भारतीय विरासत का पुनर्जीवन
- तर्कवाद एवं वैज्ञानिक दृष्टिकोण
- आधुनिक शिक्षा का प्रसार
- राष्ट्रीय चेतना का विकास
- भारतीय एवं पश्चात्य विचारों का समन्वय।

प्रमुख सुधार आंदोलन:

① राजा राममोहन राय → (ब्रह्म समाज - 1828)

- भारतीय पुनर्जागरण के जनक
- वेदांत कालेज की स्थापना • 1829 सती प्रथा पर प्रतिबंध।

② मैंग बंगाल आंदोलन [1820-30 तक]

- हेनरी लुई विविमन डेरोपिया
- शिक्षा, विचार व अभिव्यक्ति की स्वतंत्रता
- स्वतंत्रता की सुरक्षा, न्यायपूर्ण व्यवहार

③ ब्रह्मचन्द्र विद्यासागर [1820-91]

- विधवा पुनर्विवाह का समर्थन
- बहुविवाह का विरोध • वैध्वन स्कूल

④ स्वामी विवेकानंद:

- परमार्थ से व्यवहार की ओर • वेदांत प्रचार
- रामकृष्ण मठ व मिशन की स्थापना

⑤ ज्योतिराव फुले:

- सत्यशोधक समाज • गुलामगिरी • सामाजिक दुराचार

⑥ सावित्रीबाई फुले:

- सेवा मंडल • नश्वरों की हस्तान्तरण का समर्थन

⑦ ताराबाई शिंदे: • स्त्री-पुरुष तुलना।

⑧ थियोसोफिकल आंदोलन:

- मैडम एच. पी. ब्लवात्स्की
- कर्नल एम. एल. ऑलकॉट

⑨ आर्य समाज: दयानंद सरस्वती

- वेदों की सर्वोच्च व दृष्टिहीन माना
- हिंदू धर्म का आधुनिकीकरण
- सत्यार्थ प्रकाश • शुद्धि आंदोलन

⑩ एल. एन. जी. पी. आंदोलन (एस. वा. लमुलाय)

- समानता व सामाजिक न्याय पर बल।

⑪ आत्म - सम्मान आंदोलन: (ई. वी. रामासामी नायकर)

- समानतावादी आंदोलन
- ब्राह्मण पुण्यारी के बिना विवाह।

⑫ मन्दिर प्रवेश आंदोलन: टी. के. माधव.

- वैकोम सत्याग्रह - के. पी. केशव मेनन

⑬ मुस्लिम आंदोलन:

- कदावी / वलीउल्लाह आंदोलन - सैयद अहमद वरेवली
- अहमदिया आंदोलन - मिर्जा गुलाम अहमद
- अलीगढ़ आंदोलन - सर सैयद अहमद खान

⑭ पारसी आंदोलन:

- रहनुमाई मजदयासन सभा (1851)
- दादाभाई नौरोजी, फरदूनजी, के. शार कामा

⑮ सिख आंदोलन:

- अकाली आंदोलन (गुरुद्वारा सुधार आंदोलन)

प्रश्न: सामाजिक - धार्मिक सुधार आंदोलन मुख्यतः बंगाल व महाराष्ट्र तक ही सीमित क्यों रहे?

- पश्चिमी शिक्षा तक प्रारंभिक पहुँच (हिंदू कालेज)
- शिक्षित मध्यम वर्ग का विकास (राजा राममोहन राय)
- सक्रिय सुधारवादी नेता (ज्योतिबा फुले)
- मुद्रण माध्यम व सार्वजनिक बहल (लोकहितवादी - पी. एच. देशमुख)
- राष्ट्रीय एवं सांस्कृतिक केंद्र (रामकृष्ण मिशन)
- अन्य क्षेत्रों में रुढ़िवादी प्रतिरोध।

आलोचनात्मक विश्लेषण:

- अभिजात्य प्रकृति [मैंग बंगाल आंदोलन]
- सीमित जन - आधार
- प्रतिष्ठित धर्मपात (दयानंद सरस्वती ने अस्पृश्यता का विरोध, पर वर्गीय व्यवस्था का समर्थन)
- लैंगिक असमानता बनी रही।
- क्षेत्रीय अलैतुलन (बंगाल, महाराष्ट्र)
- धार्मिक ध्वंसीकरण (शुद्धि आंदोलन, अलीगढ़ आंदोलन)
- आर्थिक समस्याओं के उपेक्षा।

विभिन्न प्रतिक्रियाएँ:

• प्रति प्रियावादी तत्व: ① कड़ा विरोध ② धर्म सभा ③ हिंदू - हिंदू

• शिक्षित भारतीय - ① अधिकांश ने समर्थन दिया ② राष्ट्रीय प्रगति व आधुनिकीकरण ③ गोपाल कृष्ण गोखले

• ब्रिटिश प्रतिक्रिया -

- कुछ सामाजिक सुधारों का चयनात्मक समर्थन (सती प्रथा उन्मूलन अधिनियम 1829)
- पश्चिमी शिक्षा को बढ़ावा (मैकाले मिशन)
- 1857 के बाद धार्मिक मामलों में हस्तक्षेप न करना।
- सुधार आंदोलनों पर संदेह
- कूट डालो व राज करो (सर सैयद अहमद खान)

प्रबोधन की प्रतिध्वनि - भारत पर प्रभाव -

- ① सामाजिक परिवर्तन ② महिला स्वशक्तिकरण
- ③ राष्ट्रीय समानता ④ सामाजिक न्याय ⑤ विश्व पर प्रभाव
- ⑥ आधुनिकीकरण, शिक्षा ⑦ वैश्विक पहचान
- ⑧ सामाजिक रूप से प्रासंगिक साहित्य का सृष्ण
- ⑨ अंतरधार्मिक सौवाद ⑩ भारतीय प्रवासी समुदाय पर प्रभाव।

आधुनिक भारत की जननीयः सामाजिक परिवर्तन के केन्द्र में महिलाएँ :-

- A सती प्रथा उन्मूलन ① राजा राममोहन राय,
- ② बंगाल विधिवमन 1829.
- B कन्या श्रुण हत्या : राजा राममोहन राय, ईश्वरचंद्र विद्यासागर, दयानंद सरस्वती, बंगाल विभाजन 1795, 1804.
- C विधवा पुनर्विवाह : ① हिंदू विधवा पुनर्विवाह अधिनियम (1856)
- ② विधवा गृह - डी. के. - कर्वे
- ③ सत्यप्रकाश - करसनदास मुलजी
- D बाल विवाह : जी. एम. भालाबाई, सरस्वती रावत & सरस्वती मामला, सहमति आयु अधिनी. (1891)
- E महिला शिक्षा :
 - विधुन स्कूल (1849) - जे. ई. डी. केम्पन
 - बालिका विद्यालय, विधवा शिक्षा - फुले दंपति
 - भारतीय महिला विविद्यालय - डी. के. कर्वे
- F महिला संगठन :
 - लोप्य सौशल कॉन्फ्रेंस - रमेश सनोड
 - भारत स्त्री महामंडल - सरला देवी चौधरी
 - ऑल इंडिया विमेल कॉन्फ्रेंस - मर्सेट कप्रेन्स

सुधार आंदोलन और पति व्यवस्था :-

- आलोचना - दयानंद सरस्वती (आर्य समाज)
- निम्न पतियों का उत्थान :
 - ज्योतिबा फुले (माली) - सत्यशोधक समाज
 - स्वामी विवेकानंद - परित नारायण

उच्च पतियों की भूमिका - राजा राममोहन राय, ईश्वरचंद्र विद्यासागर, के. सी. सेना।

भारतीय राष्ट्रवाद के निर्माण में सामाजिक - धार्मिक सुधार आंदोलन की भूमिका -

- ① आधुनिक विचारों का प्रसार (स्वतंत्रता, समानता, न्याय) - राजा राममोहन राय [तुफत - उल - मुवहिदीन]
- ② राष्ट्रिय चेतना निर्माण (स्वामी विवेकानंद)
- ③ सामाजिक विभाजनों की चुनौती - ज्योतिबा फुले (सांप्रदायिक सत्य धर्म)
- ④ शिक्षित मध्य वर्ग उदय - दादाभाई नौरोजी, गोपाल कृष्ण गोखले
- ⑤ राष्ट्रवाद में महिलाओं की भूमिका - ईश्वरचंद्र - विद्यासागर, सरोजिनी नाथ, अरुणा आसफ अली
- ⑥ ब्रिटिश सर्वोच्चता की चुनौती -
 - दयानंद सरस्वती - "वेदों की ओर लौटो"
 - गणेश उत्सव - बाल गंगाधर तिलक
- ⑦ सुधार - आधारित संगठनों का निर्माण -
 - आर्य समाज - आत्मनिर्भरता, स्वदेशी आरंभ
- ⑧ कर्तव्य एवं बंधुत्व की भावना को बढ़ावा -
 - स्वामी विवेकानंद - "शिव ज्ञाने जीव सैवा"
- H महत्वपूर्ण प्रसंग -

- ① ईश्वरचंद्र विद्यासागर - "मैं इन इंदों से विद्यालय बना सकता हूँ"
- ② सवित्रीबाई फुले के पहले शिक्षण प्रियु का कथन - "मैं अपना कर्तव्य कर रही हूँ, आप अपना कीजिए"

- ③ राजा राममोहन राय - सती प्रथा उन्मूलन।

06. भारत में राष्ट्रवाद का उदय

- ① भारत में विभिन्न नेताओं ने प्रारम्भ में राष्ट्रवाद को किस प्रकार देखा :

- ① दादाभाई नौरोजी - आर्थिक शोषण को उजागर किया : उदारवादी दृष्टिकोण।

- ② बाल गंगाधर तिलक - आक्रमक, भावनात्मक तथा भारतीय परंपराओं पर आधारित राष्ट्रवाद।

③ लाला लाजपत राय - ब्रिटिश शासन का कड़ा विरोध एवं अत्यन्त कार्रवाई के समर्थन।

④ रामा राममोहन राय - आधुनिकीकरण एवं सुधारवादी राष्ट्रवाद।

⑤ स्वामी विवेकानंद - सांस्कृतिक राष्ट्रवाद।

⑥ रवीन्द्रनाथ टैगोर - सार्वभौमिक मानवतावाद।

⑦ श्री अरविंद - राष्ट्रवाद की अध्यात्मिक शक्ति के रूप में देखा।

⑧ राष्ट्रवाद के विकास कारण :-

- ① मध्यम वर्ग का उदय - सुरेन्द्रनाथ बनर्जी
- ② सामाजिक - धार्मिक सुधार आंदोलन - ब्रह्म समाज
- ③ ब्रिटिश आर्थिक शोषण - धन निकासी सिद्धांत।
- ④ नस्लीय भेदभाव एवं अन्याय - इल्बर्ट बिल विवाद।
- ⑤ पारचात्य शिक्षा व नए विचार - राजा राममोहन राय।
- ⑥ संचार एवं प्रेस का विकास - ठेकरी, मद्रास समाचार पत्र
- ⑦ राष्ट्रनीतिक संगठनों एवं भारतीय - राष्ट्रीय कांग्रेस का गठन - नेताओं को मंच
- ⑧ वैश्विक प्रभाव - अमेरिका व फ्रांसीसी क्रांति।
- ⑨ भारतीय भाषाओं के साहित्य का विकास - आनंदमठ

③ भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस (INC) से पहले के राष्ट्रनीतिक संगठन :- (A) बंगाल

- ① बंगभाषा प्रकाशिका सभा (1836)
- ② लैंडहोल्डर्स सोसाइटी (प्रमींदार सभा) - (1838)
- ③ बंगाल ब्रिटिश इंडिया सोसाइटी (1843)
- ④ ब्रिटिश इंडियन एसोसिएशन (1851)
- ⑤ इंडियन लीग - शिशिर कुमार घोष (1875)
- ⑥ इंडियन एसोसिएशन (1876) - ए. एम. बेस, सुरेन्द्रनाथ बनर्जी।

⑧ कम्वर्ड - ① कम्वर्ड एसोसिएशन (1852)
② पूना सार्वजनिक सभा (1870)
③ कम्वर्ड प्रेसीडेंसी एसोसिएशन (1885)

⑨ मद्रास - ① मद्रास नैटिव एसोसिएशन (1852) - एम. एल. चेट्टी।

⑧ मद्रास महापन सभा (1884)

④ प्रमुख विशेषताएँ :-

- ① पूर्ण स्वतंत्रता की मांग नहीं की, बल्कि भारतीयों के हितों के विरुद्ध ब्रिटिश नीतियों का विरोध किया।

② मुख्य प्रशासनिक एवं आर्थिक मंद :-

- कपास के आयात पर अनुकूल शुल्क नीति
- सरकारी सेवाओं का भारतीयकरण।
- अफ़गान नीति विरोध
- वर्नियुलर प्रेस एक्ट तथा प्रेस पर सरकारी नियंत्रण विरोध।

③ भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस (INC, 1885) :-

संस्थापक = ए. ओ. ह्यूम
प्रथम अध्यक्ष = डब्ल्यू. सी. बनर्जी

• उद्देश्य एवं लक्ष्य :-

- ① विभिन्न वर्गों के बीच मित्रता को (1)
- ② पूर्वाग्रहों को समाप्त करना।
- ③ राष्ट्रीय एकता भावना को सुदृढ़ करना।
- ④ शिक्षित भारतीयों के विचारों को व्यक्त
- ⑤ जनहित के मविल्य की कार्ययोजना की रूपरेखा तैयार करना।

⑤ कांग्रेस स्थापना संबंधित सिद्धांत :-

- ① आधिकारिक दूर्यंत्र सिद्धांत - लाला लाजपत राय
- ② भारतीय अभिजात वर्ग की महत्वपूर्णता एवं प्रतिद्वंद्विता का सिद्धांत - अनिल सील
- ③ अखिल भारतीय संगठन की आवश्यकता का सिद्धांत
- ④ लाइनिंग केंद्र सिद्धांत - विपिन चन्द्रा

कांग्रेस से पहले का राष्ट्रवाद बनाम कांग्रेस के बाद का राष्ट्रवाद :-

कांग्रेस से पहले :-

- ① क्षेत्रीय, विस्था, असंगठित।
- ② अभिजात वर्ग एवं समाज सुधारको तक सीमित।
- ③ व्यक्तिगत नेताओं एवं स्थानीय सुधारको के नेतृत्व में।
- ④ तर्कना, याचिका एवं विरोध
- ⑤ सामाजिक सुधार व स्थानीय शिकायतों के निवारण पर बल।

कांग्रेस के बाद :-

- ① अखिल भारतीय, स्कीड्ड व संगठित
- ② समाज के व्यापक वर्गों की भागीदारी
- ③ शिक्षित अभिजात वर्ग एवं राष्ट्रीय नेताओं का नेतृत्व।
- ④ संगठित मांगें, प्रस्ताव व जन आंदोलन
- ⑤ राष्ट्रनीतिक अभिगार, स्वशासन व पूर्ण स्वराज की मांग।

6. प्रारम्भिक चरण में कांग्रेस की समस्याएँ :-

1. क्षेत्रीय विविधता
2. वैचारिक मतभेद
3. जाति व धर्म के आधार पर विभाजन
4. ब्रिटिश सरकार का संदेह
5. सीमित जनता
6. दमन का तथ्य
7. उदारवादियों पर जनता का अविश्वास
8. विदेशी नेतृत्व को लेकर संदेह
9. पुराने व अप्रभावी तरीके।

• प्रारम्भिक कांग्रेस चरण - उदारवादी चरण :-

* उदारवादियों की मान्यताएँ व विचार :-

1. ब्रिटिश न्यायप्रियता पर विश्वास
2. संवैधानिक तरीकों का समर्थन
3. क्रमिक सुधार एवं संवैधानिकता।
4. ब्रिटिश साम्राज्य के भीतर स्वशासन (दादाभाई नौरोजी 1896 - 1906 में पेंसा स्वरण)
5. ब्रिटिश शासन की आर्थिक अलोचना (धन - निकासी सिद्धांत - ड्रेन सिद्धांत)
6. ब्रिटिश शासन को ईश्वर की इच्छा मानना।

उदारवादियों की प्रमुख माँगें :-

1. प्रतिनिधित्व के बिना कर नहीं।
2. स्वराज माँग
3. भारतीय सिविल सेवा का भारतीयकरण
4. ICS परीक्षा का भारत, इंग्लैंड में आयोजन
5. ब्रिटिश विदेश नीति का विरोध
6. स्वदेशी को प्रोत्साहित बनाना।
7. आयातित वस्तुओं पर शुल्क समाप्त करने का विरोध
8. कपास पर उत्पाद शुल्क लगाने का विरोध
9. न्यायपालिका, अर्थपालिका का पृथक्करण
10. अल्प आधिनियम को समाप्त करना
11. सैन्य व्यय में कमी।

- प्रमुख नेता :-
1. दादाभाई नौरोजी
 2. गोपाल कृष्ण गोखले
 3. आर. सी. दत्त
 4. महादेव गोविंद रानडे
 5. डब्ल्यू. सी. बनर्जी
 6. किरीटप्रसाद मेहता
 7. सुरेन्द्रनाथ बनर्जी
 8. वदरुद्दीन तैयबजी।

• उदारवादियों की रणनीतियाँ :-

1. याचिकाएँ और पत्राचार :- 1886 में कांग्रेस में भारतीय प्रतिनिधित्व बढ़ाने की माँग।
2. सार्वजनिक सभाएँ और वृक्षे :- इश्वर सिंह को कमजोर करने का विरोध।
3. कांग्रेस अधिवेशनों में प्रस्ताव :- 1892 में 1892 ICS परीक्षा (भारत) में आयोजित की माँग।
4. प्रेस का उपयोग :- 'द हिन्दू' का प्रभावी उपयोग
5. ब्रिटेन में लॉबींग -
6. जनता को शिक्षित करना - गोपाल कृष्ण गोखले द्वारा सर्वेंट्स ऑफ़ इंडिया सोसायटी की स्थापना।

• उदारवादियों की उपलब्धियाँ -

1. ब्रिटिश आर्थिक नीतियों की आलोचना (इनथोरी)
2. विद्यार्थी परिषदों का विस्तार (भारतीय परिषद अधिनियम 1892)
3. राष्ट्रनीतिक चेतना का विकास
4. भविष्य के नेताओं को प्रशिक्षित किया
5. अखिल भारतीय संगठन व राष्ट्रीय स्कूल की बहाल किया।
6. भविष्य के स्वतंत्रता सैनिकों की मजबूत नींव।

उदारवादियों ने भविष्य के संघर्ष की नींव किस प्रकार तैयार की ?

1. राष्ट्रनीतिक शिक्षा एवं राष्ट्रीय जागरूकता
2. ब्रिटिश शासन की आर्थिक आलोचना
3. संवैधानिक सुधारों की माँग।
4. अखिल भारतीय संगठन व राष्ट्रीय स्कूलों की मजबूत किया।
5. धर्मनिरपेक्ष व उदारवादी मूल्यों प्रसार।
6. नागरिक समाज के विकास में योगदान।
7. भविष्य के नेताओं के लिए प्रशिक्षण का आधार तैयार किया।

उदारवादी जनता की प्रभावित करने में क्या असफल रहे ?

1. ठोस उपलब्धियों का अभाव :- भारतीय परिषद अधिनियम, 1892 केवल प्रतीकात्मक प्रतिनिधित्व प्रदान कर सका।

- ② ब्रिटिश उपारता पर अत्याधिक विश्वास -
ब्रिटिश सरकार की उदारता व वार²
पडने वाले अकालों ने विश्वास कमजोर कर दिया।
- ③ जन - आंदार सीमित था।
- ④ आर्थिक आलोचना से पणरक्तता तो बड़ी,
लेकिन क्रयदा कार्यवाही राहत नहीं मिली।
- ⑤ सांस्कृतिक राष्ट्रवाद का उभार - बाल गंगाधर
तिलक व
बंगाल विभाजन के बाद इसका प्रभाव बढ़ा।
- ⑥ जनता की तत्काल समस्याओं का समाधान नहीं :
जनशिक्षा, श्रमि-राजस्व में राहत व सेवाओं के
भारतीयकरण जैसे मुद्दे उपेक्षित प्रगति नहीं।
- ⑦ ब्रिटिश सरकार की दमनकारी नीतियाँ : राष्ट्रद्रोह
अधिनियम (1870), तथा बंगाल विभाजन (1905)

बिपिन चंद्र का मूल्योंकन :

- ① प्रारम्भिक राष्ट्रवादी नेता भी थे और सीखने
वाले भी, उन्हें साम्राज्यवाद की प्रकृति की
पूरी समझ नहीं थी।

- ② जन - आंदोलन जैसे रणनीतियाँ तभी सफल
हो सकती हैं जब जनता संगठित,
जकपूट व समान राष्ट्रिय चेतना से
प्रेरित हो।

“ 1885 से 1905 का काल भारतीय राष्ट्रवाद
का बीज बोने का समय था। प्रारम्भिक
राष्ट्रवादियों ने इस बीजों को बहुत
गहराई से बोया। ” - (बिपिन चन्द्र)

7. उग्रवादियों / चरमपंथियों के अधीन कांग्रेस

उग्रवादियों के उदय के कारण

- 1) उदारवादी राजनीति की विफलता
- 2) आन्दोलन व अकास संघट
- 3) शिक्षा का विस्तार
- 4) वैश्विक प्रतिक्रिया से प्रेरणा - आन्दोलन, दौमस्त
- 5) लॉर्ड कर्जन की अहिंसा नीतियाँ
 - (i) बंगाल विभाजन
 - (ii) भारतीय विश्वविद्यालय अधिनियम 1904
 - (iii) कलकत्ता मिशन अधिनियम 1899
 - (iv) दिल्ली दरबार का आयोजन
 - (v) भारतीय अधिकारिक दृष्टि अधिनियम 1909
- 6) भारत में बढ़ती अराजकता - बंगाल में अनुशीलन समिति व महाराष्ट्र में अहिंसक भारत स्वराज एवं अधिकार प्रिटिश सरकारों पर अविश्वास
 - सांस्कृतिक राष्ट्रवाद
 - राजनीति व राष्ट्रवाद
 - विचार - जनता के बीच में विश्वास
 - आत्मनिर्भरता

वर्तनीतियाँ

- 1) प्रिटिश वस्तुओं का बहिष्कार
- 2) स्वदेशी का प्रचार
- 3) राष्ट्रीय शिक्षा को बढ़ावा देना
- 4) जनता के बीच
- 5) निष्क्रिय प्रतिक्रिया
- 6) वनस्पति प्रेस एवं साहित्य का उपयोग
- 7) सड़क पर विरोध प्रदर्शन व हड़ताल
- 8) स्वयंसेवकों का दल - स्वदेशी आंदोलन

स्वदेशी आंदोलन भारत में आधुनिक जन राष्ट्रवादी आंदोलन की वास्तविक शुरुआत थी (प्रियदर्शन)

- 1903 - बंगाल विभाजन का प्रस्ताव
 जुलाई 1905 - विभाजन की आधिकारिक घोषणा
 अगस्त 1905 - स्वदेशी आंदोलन प्रारंभ
 अक्टूबर 1905 - विभाजन लागू
 दिसंबर 1906 - कलकत्ता अधिवेशन में कांग्रेस ने स्वराज की लक्ष्य घोषित किया
 1907 - अमृत विभाजन
 1909 - मोर्ले मिशन सुधार
 1911 - विभाजन रद्द

कारण

- 1) बंगाल विभाजन की घोषणा
- 2) बढ़ती राष्ट्रवादी भावना
- 3) वर्जन की नीतियाँ - कलकत्ता मिशन अधिनियम 1899
- 4) अंग्रेजों द्वारा आन्दोलन - भारत में औद्योगिकीकरण
- 5) वैश्विक आंदोलन से प्रेरणा - इतिहासिक की बदली पर विचार, जो अर उच्च विशेषताएँ
- 6) विदेशी वस्तुओं का व्यापक बहिष्कार
- 7) विदेशी सामान बेचने वाली दुकानों पर धरना
- 8) स्वदेशी का प्रचार व उपयोग
- 9) राष्ट्रीय शिक्षा पर जोर
- 10) स्वयंसेवी वाहिनी - समितियों का गठन
- 11) पत्रपत्रिकाओं द्वारा स्वदेशी आंदोलन का उपयोग

स्वदेशी आंदोलन पर प्रिटिश प्रतिक्रिया

- 1) उग्रवादी नेतृत्व का दमन
- 2) चरमपंथियों को संतुष्ट करने के लिए मोर्ले मिशन सुधार
 - महत्त्व
 - 1) पूर्ण व्यावहारिकता का सिद्धांत
 - 2) राष्ट्रीय स्तर पर पद्धत व सफल जन आंदोलन
 - 3) कड़ी सजा में महिला आगीदारी सरता देवी चोखरानी
 - 4) आक्रमक व सीधी कार्रवाई
 - 5) आठ व सांस्कृतिक आंदोलन - ए. आर. देसाई
 - 6) आत्मनिर्भरता प्रिटिश वस्तुओं का बहिष्कार सीमाएँ

- 1) सीमित पहुँच - ग्रामीण क्षेत्रों से अलग नहीं
- 2) आठ चुनौतियाँ
- 3) आंतरिक विभाजन
- 4) दमन
- 5) नेतृत्वहीन - प्रभुजन नेताओं की गिरफ्तारी

उदारवादी

- 1) सार्वजनिक व प्रतिक्रिया सुधार
- 2) मुजर व तत्पक्ष सुधार
- 3) साम्राज्य के भीतर स्वशासन
- 4) पूर्ण स्वराज
- 5) पांचिपार, संकल्प
- 6) बहिष्कार निष्क्रिय प्रतिक्रिया
- 7) प्रिटिश उदारवाद पर विश्वास
- 8) व्यापक जनसमर्थन
- 9) विहित मध्यम वर्ग
- 10) तित (लात-जात-पात)
- 11) मोरोजी, गोपाल
- 12) वनस्पति प्रेस एक्ट
- 13) अंग्रेजी प्रेस
- 14) स्मोर फोन
- 15) मोर्ले मिशन सुधार पारित

उग्रवादी

भारत विभाजन

कारण

- ① नरम दल व गरम दल का विभाजन
- ② अगले कांग्रेस अधिवेशन के नाम पर मतभेद
उत्तरवादी स्वदेशी आंदोलन को संपूर्ण भारत में
विस्तारित करता चाहते थे
- ③ उग्रवादियों की पार्टी से निष्कासित किया गया

8. 'क्रांतिकारी गतिविधियों' का उद्भव-परणाम (1907-17)

कारण

- ① उत्तरवादी राजनीति से मौखिक → वेगल विभाजन (1905)
- ② वेगल विभाजन (1905) → फूट डालो बाज करो
→ अनुशीलन समिति, जुदीराम बोस
- ③ मुखर राष्ट्रवाद का विकास (लात-पल-वाल)
- ④ भारतीय संस्कृति एवं ऐतिहासिक गौरव का
प्रभाव → गणपति व शिवाजी उत्सव
- ⑤ दमनकारी ब्रिटिश नीतियों → राजमोह अखि
- ⑥ अंतर्राष्ट्रीय प्रभाव → दक्षिणोपिचा द्वारा इटली
पर विजय, जापान द्वारा रूस पर विजय
- ⑦ आंधोलन व व्यापक गरीबी → प्रथम विश्वयुद्ध
- ⑧ युवा आगिदारी व व्यापक आंदोलन → जर्मन दल
- ⑨ कांग्रेस से दूर → नरमपंथी व गरमपंथी
क्रांतिकारियों की प्रमुख खोजनीतियाँ

- ① गुप्त समितियों का गठन → अनुशीलन समिति
- ② हिंसा व सशस्त्र संघर्ष का प्रयोग
→ अलीपुर छम बंस (1908) → जुदीराम बोस, प्रफुल्ल
- ③ ब्रिटिश अधिकारियों व सत्ता के प्रतीकों को
निशाना बनाना → अमेर लखन कच्छेरे द्वारा
नासिर में मजिस्ट्रेट जेक्सन की हत्या
- ④ सांस्कृतिक पुनरुत्थान से प्रेरित राष्ट्रवाद
→ गणपति व शिवाजी उत्सव
- ⑤ अंतर्राष्ट्रीय 'क्रांतिकारी आंदोलनों' का प्रभाव
→ सावरकर ने 1857 की भारतीय स्वतंत्रता का
प्रथम संग्राम
- ⑥ अपमान का महिमांडन → जुदीराम बोस (1878)

महत्व

- ① मनोबलानिक प्रभाव → अंग्रेजों की अजयता
- ② राष्ट्रीय जागृति → उग्रतर व बंदे मतरम
- ③ अंतर्राष्ट्रीय समर्थन व मान्यता → गदर आंदोलन

④ सशस्त्र संघर्ष को प्रोत्साहन → IMA में
संरक्षितरी बोस की भूमिका

⑤ गतिविधि के नेताओं को तैयार करना

→ सावरकर, अगत सिंह, सुभाष चंद्र बोस

⑥ ब्रिटिश दमन का पदपाश
→ अलीपुर छम बंस व कावोरी छम दल

⑦ गुजराती की राजनीति को प्रभावित करना
→ असहयोग आंदोलन

फसियाँ

- ① जन समर्थन का अभाव (उग्रतर)
- ② क्षेत्रीय व प्रथम प्रभुता (गदर आंदोलन)
- ③ अपर्याप्त योजना एवं संसाधन
→ गुजफरपुर छम बंड (1908)
- ④ बंडोर ब्रिटिश दमन → अलीपुर छम बंड
- ⑤ सीमित वैचारिक स्पष्टता → मित्र नेता
- ⑥ अल्प समुदायों का असहयोग
- ⑦ तत्काल लक्ष्य प्राप्त करने में विफलता

क्रांतिकारी गतिविधियाँ

वेगल

- ① अनुशीलन समिति, उग्रतर
- ② वानेन्द्रनाथ जसु, जारिंद्र धोष, रास बिहारी बोस
- ③ 1907 → गवर्नर कैबिनेट की ड्रेन की पट्टी से
उतारने का प्रयास
- ④ 1908 → जज रिंग्सफोर्ड पर हमला (जुदीराम बोस)
- ⑤ 1908 → पुलिस दल द्वारा जर्जर की हत्या
- ⑥ वात, संख्या व उग्रतर पत्र
महाराष्ट्र

- ① रामोसी किसान सेना (1879) → वासुदेव जसेवत फडके
- ② न्यायवर के धुआँ के → रैंड व आपस्ट की हत्या
- ③ सावरकर व उन के जर्जर ने मित्र नेता की स्थापना
- ④ नासिर, जना व के जर्जर में छम बनाना

पंजाब

- ① लाला लाजपत राय → पंजाबी पत्रिका
- ② अजीत सिंह → अजुगन-ए-गोहिसबान-ए-वतन
- ③ रास बिहारी बोस → गदर क्रान्ति का नेतृत्व व
IMA की स्थापना

बिहार

- ① श्यामजी प्रखरवर्मा → लंदन में इंडिया हाउस,
दक्षिण सोशियलिस्ट पत्रिका
- ② मदनलाल दीगरा → बर्जिन-बिली की हत्या
- ③ भारतीय स्वतंत्रता के लिए वसुधैव कुटुम्बक की
स्थापना → वीरेन्द्रनाथ चट्टोपाध्याय, लाला हरदयाल

गदर आंदोलन → 1913

→ सैन्य फ्रांसिसको - गदर पार्टी - गदर आंदोलन
कोमागाटा भारत हादसा

→ 370 पानी → सिंगापूर में बंदूक → 22 मृत्यु
1909 का भारतीय परिषद अधिनियम (भारतीयों को सुधार)
प्रथम विश्व युद्ध व भारतीय राष्ट्रीय आंदोलन

प्रभाव

- 1) बहती आंखें व जिंदगी → मुद्रास्फीति, दहशत
- 2) जबरन धर्ती व ग्रामीण अधांति → 1.3 M + सैनिक धर्ती
- 3) रां उम्मीदों के साथ विश्वासघात → मोरांगु चेंसफोर्ड सुधार (1919)
- 4) महात्मा गांधी व सत्याग्रह आंदोलन का उदय
→ चंपारण सत्याग्रह 1917, जेडा सत्याग्रह 1918
- 5) जनता का भाग नरसंहार → नरसंहार
- 6) खिलाफत आंदोलन व हिंदू-मुस्लिम एकता
→ अहमदिया आंदोलन (1910-22)
- 7) सामूहिक राष्ट्रवाद की ओर बढ़ता
- 8) प्रांतीय एवं गणपंची विचारधारा का उदय
→ MSRA का गठन
- 9) औद्योगिक क्रम का विकास → कॉमनवेल्थ एपडामिले
प्रथम विश्व युद्ध पर भारतीय समाज की प्रतिक्रिया

- 1) उपद्रवादी → रां रियायती की आशा
- 2) उग्रवादी → युद्ध समर्थन - होमरूल के माध्यम से
राष्ट्रवादी भांगों की पुनर्जीवित
- 3) क्रान्तिकारी → गदर आंदोलन - सशस्त्र विद्रोह योजना
- 4) शाही मध्यम वर्ग → ब्रिटिश उद्देश्य का समर्थन
होम क्ल आंदोलन

तितक

- 1) अग्रेत 1916
- 2) MM (मुंबई), KR,
मध्य प्रांत व वरार
- 3) एन. सी. केकर,
K.M. मुंशी, A.R. जयकर
- 4) पतन → तितक इंग्लैंड
पते गए।

सफलताएं

- 1) राष्ट्रवादी भावना पुनर्जीवित की
- 2) रां जागरूकता का प्रसार
- 3) अखिल भारतीय पहूँच
- 4) जन आंदोलनों के लिए जमीन तैयार की

रनी वैसेंट

- 1) सितंबर 1916
- 2) मद्रास, गौड़ भारत (मुंबई)
- 3) G.D. अरुंदेन, B.R. वाडिया
C.P. रामस्वामी अय्यर
- 4) 1917 में वैसेंट को
नजरबंद कर दिया

- 5) नरमपंथियों व चरमपंथियों के बीच एकता
- 6) सरकारी प्रतिक्रिया हेतु दबाव
पतन

- 1) सीमित जन आधार
- 2) स्वतंत्रता का बोर्ड स्पष्ट लक्ष्य नहीं
- 3) नेतृत्व के मुद्दे
- 4) अल्पवांछित गति
- 5) आंतरिक प्रभाव

कांग्रेस का पुनः एकीकरण

- अंतर विभाजन (1907)
- 1916 के लखनऊ अधिवेशन
- लखनऊ सम्मेलन - 1916

पृष्ठभूमि

- 1) प्रथम विश्व युद्ध 2) हिंदू-मुसलमान संबंधों में एकता
- 3) कांग्रेस व मुस्लिम लीग अलग अलग काम
प्रयुक्त प्रबंधन
- 4) कांग्रेस + ML → रां भांग पर एक साथ
- 5) स्वशासन की भांग
- 6) कांग्रेस ने मुसलमानों के लिए प्रत्येक निर्वाचित
स्वीकार कर ली।

महत्व

- 1) हिंदू-मुस्लिम एकता
- 2) कांग्रेस का पुनः एकीकरण
- 3) स्वशासन की सामान्य भांग
- 4) राष्ट्रीय आंदोलन का संश्लिष्टकरण
- 5) अंग्रेजों पर दबाव
आलोचना

- 1) साम्प्रदायिक रां दो बहाव
- 2) अल्पवांछित एकता, दीर्घवांछित विभाजन
- 3) धर्मनिरपेक्षता को समझौते दिया गया
- 4) कुछ क्षेत्रों में अति प्रतिनिधित्व
- 5) विभाजन की रां का अतिव्यवस्थापक
भारत सरकार अधिनियम 1919

- 1) प्रत्येक निर्वाचित → सिखा, सिखा, एल्ले व डियन
- 2) भारत के राज्य सचिव को ब्रिटिश राजस्व वतन
- 3) प्रांत में प्रत्येक शासन निकायों में अतिव्यवस्थापक
- 4) केंद्र में प्रत्येक नीति निर्धारण
- 5) ICS परीक्षा भारत में आयोजित
- 6) महिलाओं को वोट देने का अधिकार मिला

9. भारतीय राष्ट्रीय आंदोलन का गांधीवादी चरण

दो अफ्रीका में प्रमुख घटनाएँ

1. प्रोबिक् संघर्ष → पीटरमैरिट्जबर्ग में एक ट्रेन के डिब्बे से बाहर फेंक दिया गया (1893)
 2. नेटाल इंडियन कांग्रेस (1894)
 3. काला अधि० व एप्लिफार्ड पंजीकरण अधि० (1906)
 4. टॉल्स्टॉय फार्म (1910)
 5. मतदान दर का निरसन (1914)
- गांधीवादी राजनीति के नैतिक बिचार

→ हिंदू स्वराज

1. निष्क्रिय प्रतिरोध 2. अहिंसा 3. सत्याग्रह
 4. स्वराज (स्वशासन) 5. सत्य 6. स्वदेशी एवं आ० आत्मनिर्भरता 7. सा० सुधार 8. रचनात्मक कार्यक्रम
 9. प० विचारों का प्रभाव
 - टॉल्स्टॉय की शिष्टता का साम्राज्य आपर की तरह है
 - रूसिजन की 'अनडिस्स लास्ट'
 - धर्म की सविनय अवज्ञा
- गांधी के नेतृत्व में प्रोबिक् जन आंदोलन

1. चंपारण सत्याग्रह (1917)
 - चंपारण एपि अधि०
 2. जेडा सत्याग्रह (1918)
 - दर संग्रह को निलंबित
 3. अहमदाबाद मिल हड़ताल (1918)
 - 35% वेतन वृद्धि
- इन तीनों सत्याग्रहों का महत्व

1. सत्याग्रह को एक जन उपकरण
 - विरोध की एक नई भाषा के रूप में
2. शहरी-ग्रामीण विभाजन को कम करना
3. भ्रष्टाचारवादी व परिणामांशमुख दृष्टिकोण
4. गांधी की सार्वजनिक छवि
5. उप-ठकेदार

महात्मा गांधी के रचनात्मक कार्यक्रम

1. वादी व स्वदेशी का प्रचार-प्रसार (चरखा)
2. विदेशी वस्तुओं व संस्थानों का फटिफार
3. हिंदू-मुस्लिम एकता

4. अस्पृश्यता का उन्मूलन
5. राष्ट्रीय शिक्षा को बढ़ावा देना
6. ग्राम पुनर्निर्माण व ग्रामीण उन्नयन
7. महिलाओं की भागीदारी
8. शराबंदी व सा० सुधार

गांधी जी 20 नीतियाँ जिसने उन्हें एक जन नेता बनाया

1. सत्याग्रह - अहिंसक प्रतिरोध
 - चंपारण सत्याग्रह 1917
2. जन-सामान्य से जुड़ाव → वादी आंदोलन
3. स्थानीय मुद्दों को राष्ट्रवाद से जोड़ना
 - गुरुबापुर सत्याग्रह
4. नैतिक एवं धार्मिक अपील → नमक मार्च 1930
5. समावेशिता - महिलाएँ, दलित, ग्रामीण
6. प्रतीकवाद एवं सरलता
7. स्वैच्छिक पीडा एवं उपवास
 - युना पेंसट के दौरान आग्रह अनशन
8. विदेशीय जन लामछेदी → असहयोग आंदोलन

गांधीवादी राष्ट्रवाद व उनके पूर्ववर्ती राष्ट्रवाद के बीच तुलना

पूर्ववर्ती

1. (A) ब्रिटिश व्यवस्था में सुधार, (E) स्वराज
2. उच्च वर्ग का नेतृत्व
3. सामरिक भागीदारी
4. 1-2 संबंधानिक तरीका
 - फटिफार, स्वदेशी
5. प० उदारवाद, संसदीयता
6. धर्म निरपेक्ष
7. प्रतीकों का उपयोग
8. अंग्रेजी प्रधान नागरिक व भाषण
9. आ० सुधार, धर्म निरासी

गांधीवादी राष्ट्रवाद

1. आक्रमण पर ध्यान
2. जन नेतृत्व
3. ग्रामीण भारत भी शामिल
4. सत्याग्रह, सविनय अवज्ञा
5. सत्य, अहिंसा, स्वशासन
6. आत्मनिर्भरता ↑
7. धर्म के नैतिक अध्यात्म तत्वों को राष्ट्रवाद में शामिल
8. नमक, चरखा, वादी
9. स्थानीय भाषा के संचार

अन्य समकालीन नेताओं के साथ गांधी की तुलना

1. गांधी → सत्य, अहिंसा, सत्याग्रह
2. अंबेडकर → सा० न्याय, समानता, जाति उन्मूलन
3. नेहरू → सार्वजनिक मानवतावाद
4. बोस → उग्रवादी राष्ट्रवाद, समाजवाद

- ⑤ नेहरू - लोकतांत्रिक समाजवाद व धर्मनिरपेक्षता
 ⑥ वल्लभभाई पटेल - व्यावहारिक राष्ट्रवाद, एकता

10. जनआंदोलनों का दौर प्रारंभ

पृष्ठभूमि

- ① रोलैट्ट एक्ट - भारतीय सत्याग्रह
 ② प्रथम विश्व युद्ध ③ गांधी - चेम्सफोर्ड सुधार
 ④ वार्तिकारी गतिविधियाँ

रोलैट्ट एक्ट

- ① 6 अप्रैल 1919 - देशाव्यापी दड़ताले
 ② 3 अप्रैल 1919 - 20K लोगों का विरोध जुलूस
 शम नवमी का उत्सव का इस्तेमाल
 ③ गांधी की गिरफ्तारी व विचित्र सत्यपात के
 विवर्तन
 ④ 13 अप्रैल 1919 - बैसाखी (चौधर) के दौरान
 जलियांवाला बाग कांड - 379 लोग मारे गए
 ⑤ जनरल डायर की हत्या : न व वायसरॉय लॉर्ड
 चेम्सफोर्ड को वापस छुटाने की मांग

⑥ अहमदाबाद में दंगे शुरू हुए व सत्याग्रह

⑦ वल्लभभाई पटेल व इंदुलाल पाजनिव
 पशांति की अपील की परंतु - दर्ज जारी रहे

⑧ 14 अप्रैल 1919 - गांधी - सविनय अवज्ञा की
 निम्नलिखित करने व अहिंसा की प्रामाण्य रखना
 परिणाम

→ गांधी की भारतीय शान से सम्बन्ध आगे लाना

→ विविध सां. धार्मिक व क्षेत्रीय समूह एकजुट

→ राष्ट्रवाद की जन आधारित संघर्ष में व्यक्तता

→ दो दंगे शुरू लीग (एनी बेसेंट व तिलक)

खिलाफत आंदोलन

उद्भव - ओटोमन खलीफा की रक्षा के लिए उभरा
 प्रकृति - अजित - वस्तुनिष्ठ भावना में निहित लेकिन
 साम्राज्यवाद - विरोधी व राष्ट्रवादी आरंभों से प्रेरित
 गांधी की भागीदारी - स्वशासन

→ 1920 में खिलाफत व असहयोग आंदोलन का विलय
 हिंदू मुस्लिम एकता

① अंतरधार्मिक प्रतीक

② मुसलमानों ने गोद ल्या से परहेज किया

③ हिंदुओं की गस्जिदों में आमंत्रित किया गया

④ संयुक्त सार्वजनिक विरोध प्रदर्शन व एकजुटता

→ मुसलमानों में शान जागृति

→ विताफत सम्मेलन व असहयोग निर्णय

→ मई 1920 की शांति संधि ने तुर्क साम्राज्य
 कमजोर किया

① आंधाधार ② तुर्की पर निर्भरता

③ अल्पकालिक एकता ④ स्पष्ट राष्ट्रीयता का अभाव

असहयोग आंदोलन

कारण

① कमजोरी कानून (रोलैट्ट एक्ट की तरह)

② जमियांवाला बाग नरसंहार (1919)

③ सर्वोच्च न्यायिक सुधारों की विफलता

④ प्रथम विश्व युद्ध के बाद व्यापक असंतोष

⑤ विताफत का मुद्दा

⑥ सत्याग्रह व अहिंसा में विश्वास

आंदोलन की शुरुआत व प्रारंभिक चरण

→ 1 अगस्त 1920 - आंदोलन शुरू (1920-21)

- (i) उपाधियों व मानद पद का समर्पण
 (ii) सरकारी एवं गैर सरकारी कार्यों का बहिष्कार
 (iii) सरकारी स्कूलों व कॉलेजों से विन्यास
 (iv) वकीलों व वादकारियों द्वारा ब्रिटिश अदालतों का
 बहिष्कार
 (v) ब्रिटिश अधिकारियों के लिए सैन्च सैवा से इंकार
 (vi) विद्यालय परिषदों के चुनाव का बहिष्कार
 (vii) विदेशी वस्तुओं का बहिष्कार व राष्ट्रीय संस्थाओं
 का प्रचार

अगला चरण - विजयवाड़ा कांग्रेस (मार्च 1921)

उत्पन्न निर्धारित

- (i) 1 करोड़ कांग्रेस सदस्य
 (ii) तिलक स्वराज बांध के लिए रु 1 करोड़
 (iii) 20 लाख चरणों वितरित

तीसरे चरण की मुख्य विशेषताएँ (1921 के मध्य से
 अंत तक)

जुलाई 1921 - मौलवी ने
 मुसलमानों के लिए ब्रिटिश सेना में सेवा करना
 धारण से गैर मान्यता घोषित किया।

1921 नवंबर - प्रिंस ऑफ वेल्स की यात्रा को प्रति
 व्यापक समर्थन

→ दड़ताले, प्रदर्शन व दंगे

→ कई शाहरी में सफल बहिष्कार

चौथे चरण (1921 के अंत में - 1922 के प्रारंभ में)

- (i) कांग्रेस के स्वयंसेवकों
 (ii) 'उर्निदा सेत्रो' में कांग्रेस द्वारा प्रांतीय सविनय

अवका की अनुमति ले गई

(ii) सरकार की सख्ती तेज

आंदोल का प्रभाव

(i) छात्र विद्रोह → 800 राष्ट्रीय विद्यालय / कॉलेज स्थापित किए गए।

(ii) वकील विद्रोह → C.R. दास, मोतीलाल नेहरू

(iii) विदेशी वस्तुओं का विद्रोह → एक वर्ष में आयात 102 करोड़ रु से घटकर 57 करोड़ रु हो गया।

(iv) सरकार का विद्रोह → 1923 में 33 लाख सैनिकों असहयोग आंदोल का क्षेत्रीय प्रसार

(i) बंगाल → करों के विरुद्ध आंदोल चलाया

(ii) आंध्र प्रदेश → विजयवाड़ा कांग्रेस अधि०, नो-टैक्स आंदोल

(iii) केरल (मात्तापार) → मोफला विद्रोह (1921)

(iv) दिल्ली व संयुक्त प्रांत → प्रिंस ऑफ वेल्स की यात्रा पर धरना

(v) UP → अवध - किसान सभा

आंदोलन का महत्व

1 सभी वर्गों व क्षेत्रों में व्यापक भागीदारी

→ 300000 से अधिक छात्रों ने सरकारी स्कूल छोड़ दिए

2 छा० समुदायों का एकीकरण → जिलागत आंदोल

3 अहिंसक समुदायों का एकीकरण → चरखा, जादी

4 ब्रिटिश हुकूमत से सीधी टक्कर

5 रा० दृष्टिकार के रूप में विद्रोह → C.R. दास

6 कांग्रेस एक जन मंच बन गई → नागपुर सत्र 1920

7 गांधीजी के नेतृत्व का उदय →

आंदोल का पतन व रूग्णता

1 चोरी-चोरा धटना (फरवरी 1922)

2 वापसी के बाद ठोस योजना का अभाव

3 कुछ क्षेत्रों व वर्गों से सीमित भागीदारी

4 ब्रिटिश सरकार द्वारा दमन

5 आ० रूग्णताओं व व्यय

6 राष्ट्रीय आंदोलन के भीतर विभाजन

7 दिगंत जितनी बड़ी शूल (सुभाष चंद्र बोस)

आंदोल के महत्व : अविरोध के संघर्ष की नींव का निर्माण

उत्पन्न पहल

(i) विधानिकाओं के परिषद का प्रवेश

(ii) UP, पंजाब व बंगाल जैसे क्षेत्रों में हिंसक

(iii) गांधी का रचनात्मक कार्यक्रम

स्वराजवादी

परिवर्तन विरोधी

1 मोतीलाल नेहरू, C.R. दास विद्रोह आई पटेल

1 C. राजगोपालाचारी, बल्लभभाई पटेल

2 विधान परिषदों के प्रवेश करना चाहते थे व ब्रिटिश नीतियों के भीतर से उठना चाहते थे

2 परिषदों का विद्रोह 3 जादी, शिक्षा व सरकार को ढावा

3 1923 में स्वराज पार्टी गठन

4 समाज सुधार, ग्रामीणता व विदेशी

4 1923 में चुनाव लड़ा व केंद्रीय व प्रांतीय विधानमंडल में प्रवेश

वस्तु का विद्रोह

अंतिम परिणाम → दोनों गुट कांग्रेस के अधीन रहे व एक दूसरे के प्रयासों के पूरक रहे गांधीवादी रचनात्मक कार्यक्रम

1 जादी व क्ताई

2 ग्रामोद्योग

3 राष्ट्रीय शिक्षा

4 हिंदू-मुस्लिम एकता

5 अस्पृश्यता विरोधी प्रयास

6 विदेशी वस्तु एवं सरकार का विद्रोह

7 अन्नमौ व जमीनी स्तर की भागीदारी के माध्यम से ग्रामीण उत्थान पर जोर दिया गया। रणनीति का महत्व

1 निरंतरता 2 दृढ़ता व मौद्रिक दौरे बना

3 अविरोध के संघर्षों के लिए जनता को तैयार करना

4 जनता निरंतर रा० आंदोल को वापस नहीं खींच सकती

5 लोगो को गैर आंदोल अवधि के दौरान लगे रहने का एक तरीका

6 क्ताई से मुक्ति के लिए भागीदारी के अभाव में

उपलब्धियाँ

→ गांधी ने आल इंडिया स्पिनर्स एसोसिएशन स्थापना

→ 5000+ गांव, चार लाख+ स्पिनर्स / हार्ड्स व

200000+ धुनदरो को रोजगार

निष्कर्ष

1 रणनीतिक मूल्य → जन आंदोलन चरणबद्ध चरण

2 आ० मूल्य → ग्रामीण गरीबी को रोजगार व राष्ट्र प्रदान की गई।

3 नैतिक मूल्य → एक आदर्श भारतीय गांव के गांधी जी के दृष्टिकोण को अर्थ रूप दिया।

स्वराजवादी (1923-27)

1 औपनिवेशिक निरंकुशता का भवतीकरण

→ केंद्रीय विधानसभा के अस्तित्व → विद्रोह आई पटेल

- ② जनविरोधी शून्यों पर अंकुश
- ③ नागरिक स्वतंत्रता की रक्षा
- ④ राष्ट्रवादी गति को प्पनाए रखना
- ⑤ राष्ट्रवादी ताकतों की रक्षा
- ⑥ संसद के संसदीय रणनीति

मुद्दे

- ① औपनिवेशिक व्यवस्था के भीतर कार्य करना
- ② कांग्रेस के भीतर विभाजन ← स्वराजवादी
- ③ सीमित विधायी शक्तियाँ
- ④ ब्रिटिश सहिष्णुता पर निर्भरता
- ⑤ जमीनी स्तर के कार्यकर्ताओं की आलोचना
- ⑥ जनता के बीच का अभाव

पुनः

- ① आंतरिक विभाजन → उत्तरापित्तवादी व परिवर्तन विरोधी
- ② C.R. दास की मृत्यु (1925)
- ③ विधानमंडल में सीमित प्रभाव
- ④ गांधीवादी रणनीति की पुनर्वापसी
- ⑤ सविनय अवज्ञा आंदोलन का उदय

सादमन कमीशन (1927)

विरोध → सर्व-श्रेष्ठ संरचना, सादमन वापस जाओ
 ① लाला लाजपत राय → मृत्यु

प्रस्ताव

- ① जैमिनिजन स्थिति
- ② भारतीय अधिपति की गारंटी
- ③ सार्वभौमिक व्यवस्था में अधिकार
- ④ अलग निर्वाचन क्षेत्र नहीं (मुसलमानों सहित)
- ⑤ धर्मनिरपेक्ष राज्य
- ⑥ भाषाई भात

परिणाम

- ① मुस्लिम लीग ने स्वीकार नहीं किया
- ② जवाहरलाल नेहरू व सुभाषचंद्र बोस के नेतृत्व में कांग्रेस ने नेहरू रिपोर्ट की प्रस्तावना की
- ③ संसद का सफल (1928)

पुनः मुद्दे के पक्ष के कारण कांग्रेस ने एक संशुद्ध प्रस्ताव पारित किया

ब्रिटिश सरकार ने 31 दिसंबर 1929 तक नेहरू रिपोर्ट लाहौर अधिवेशन (1929)

पुनः स्वराज की घोषणा

प्रथम स्वतंत्रता दिवस (26 जनवरी 1930)

11. भारत में प्रांतिवारी राष्ट्रवाद - चरण II (1920-30)

वैश्व घटनाओं एवं परिवर्तनों का प्रभाव

- ① कसी क्रांति (1917)
- ② प्रथम विश्व युद्ध की समाप्ति (1919)
- ③ आयरिश स्वतंत्रता संग्राम → गुरिल्ला रणनीति
- ④ अंतर्राष्ट्रीय साम्यवाद का विकास → ए.एन. राय
- ⑤ चीनी क्रांति (1920)
- विश्वास व विचार

- ① संसद के अंतर्गत आंदोलन → MSRA द्वारा द्वैतीय विधानसभा पर क्रांति
- ② सर्वेधानिक सुधारों की अस्वीकृति → भारत सरकार अधिनियम 1919

- ③ समाजवादी आदर्शों के प्रति प्रतिष्ठा
- ④ अंतर्राष्ट्रीयवादी दृष्टिकोण
- ⑤ युवा लामबंदी
- ⑥ संस्कृतिक दावा
- प्रमुख नेता

- ① भगत सिंह, राजगुरु एवं सुखदेव
- ② चंद्रशेखर आजाद
- ③ राम प्रसाद बिस्मिल
- ④ अरुण सेन (मास्टर फा)
- ⑤ सुभाषचंद्र बोस (बंगाल)
- ⑥ अनुशीलन समिति (बंगाल)

प्रथम चरण (1919-20)

दूसरा चरण (1920-30)

- ① राष्ट्रवादी, ब्रिटिश विरोधी
- ② अखिल भारतीय, सावरकर
- ③ सच्चिदानंद, गुप्त वीर
- ④ सीमित व स्थानीय
- ⑤ लोह व स्थानीय
- ⑥ नृनतम जन आगीवागी
- ⑦ राष्ट्रवादी, ब्रिटिश विरोधी व समाजवादी
- ⑧ भगत सिंह, चंद्रशेखर
- ⑨ समाजवादी शरिफ
- ⑩ कसी, आयरिश, चीनी
- ⑪ MSRA जैसे अखिल संरचित संगठन
- ⑫ भीड़िया, बोधनाफा, अदालत

सफलता

- ① बाबू चेतना की जागृति → पूर्ण स्वराज
- ② प्रतिष्ठित शहीद
- ③ युवाओं के लिए प्रेरणा
- ④ पाद के आंदोलन से जुड़ा
- ⑤ परीक्षणों का प्रभावी उपयोग

विफलता

- ① दूर दमन → बंगाल रेगुलेशन एक्ट III
- ② जवाहर का अभाव

- ③ आंतरिक फुट व विश्वासघात
- ④ कोई स्पष्ट राय कार्यक्रम नहीं
- ⑤ संगठित नेतृत्व का अभाव

12. सविनय अवज्ञा आंदोलन

मूल घुण्डाभूमि

- ① सादमन कांग्रेस (1929) ② नेहरू रिपोर्ट (1929)
- ③ कांग्रेस का लाहौर अधिवेशन (1929) ④ 11 श्रुतीभंग
- ⑤ प्रतिपक्षी चरणम का अंत → HSR का दमन खोजी व कार्यप्रणाली

- ① प्रतीपक्षीक शुरुआत → नमक मार्च 12 मार्च 1930
- ② नमक का मुद्दा खोजी व रूप से चुना गया
- ③ कोई कर अभियान नहीं → कादवली (गुजरात)
- ④ बहिष्कार
- ⑤ महिलाओं की भागीदारी
- ⑥ ग्रामीण जुलुस

गांधीदारी का स्तर

- ① छात्र → आराध्याद विश्वविद्यालय
- ② किसान → UP, गुजरात, बिहार
- ③ महिलाएँ → कमलादेवी चट्टोपाध्याय
- ④ मुसलमान → जिनाफत की विपत्तता
- ⑤ व्यापारी वर्ग
- ⑥ दल भारत
- ⑦ 30-40 शीघ्रता प्रांत → धान अछुल गम्पारधान

ब्रिटिश प्रतिबिम्ब

- ① पूर दमन → 900000+ (गांधी+नेहरू) लोगो को जेल
- ② धरासणा नमक व्यापार अंतर्राष्ट्रीय मीडिया कवरेज
- ③ संसदशिव व प्रतिबंध
- ④ गांधी दरविन समझौता (मार्च 1931)

सफलता

- ① जन सामर्थ्यो 1 पक्षीवार — जनता, महिलाएँ, किसान
- ② अंतर्राष्ट्रीय ध्यान
- ③ राष्ट्रीय एकता की मजबूत बिजा
- ④ अगले चरण के लिए प्रब्रिजा का निद्वारिण
- ⑤ अग्रणी पर दबाव

विपत्तता

- ① गांधी-दरविन समझौते की एक समझौते के रूप में देखा
- ② अज्ञात सिंह व उनके साक्षिों की सजा
- ③ पुस्तिक असंगत
- ④ कोई तत्काल संवेधानिक लाभ नहीं

- ⑤ दमन ने गति को समजोर दिया
- ⑥ जुडिका फाउण → धारावि दसने कई लोगो को प्रेरित बिजा, दसने उन अल्पसंख्यको को भी अलग धतग कर दिया जो कांग्रेस की हिंदू बहुसंख्यक हिता का प्रतिनिधित्व करने वाले के रूप में देखते थे।

गांधी-दरविन समझौता (मार्च 1931)

- ① आंदोलन का स्थगन
- ② गांधी लंदन में दूसरे गोलमेज सम्मेलन में भाग लेंगे
- ③ रा.0 वैदियों को रिहा + शांतिपूर्ण धरने की अनुमति

गोलमेज सम्मेलन (1930-32)

- ① प्रथम (1930) → कांग्रेस X
- ② द्वितीय (1931) → गांधी ✓
- ③ तृतीय (1932) → गांधी X

जाति व भारतीय राष्ट्रीय आंदोलन (1930-32)

- ① सांप्रदायिक पुरस्कार (1932)
- ② PM रमसे मैकडोनाल्ड
- ③ प्रथम निर्वाचन → पहली बार दलित वर्ग
- ④ फुट दाली राज करो
- ⑤ गांधी की प्रतिबिजा
- ⑥ प्रथम निर्वाचन का विरोध
- ⑦ परवदा जेल में आगरा अनशन शुरु
- ⑧ पूना पैक्ट
- ⑨ प्रथम निर्वाचन क्षेत्र को दटा दिया
- ⑩ संयुक्त निर्वाचन क्षेत्रों में दलित वर्गों की अरक्षण
- ⑪ दलितों की शिक्षा व सा.0 उद्यान का प्रावधान

गांधी

- ① वर्ण व्यवस्था ✓
- ② अस्पृश्यता X
- ③ धरिजन
- ④ हिंदू धर्म के भीतर सुधारों माध्यम से संरचनात्मक परिवर्तन के माध्यम से नैतिक व आध्यात्मिक उद्यान पर ध्यान
- ⑤ प्रथम निर्वाचन क्षेत्रों का विरोध
- ⑥ मंदिर प्रवेश व धरिजन उद्यान
- ⑦ हिंदू धर्म के भीतर सुधार
- ⑧ हिंदू एकता का स्वरूप
- ⑨ अस्पृश्यता की ओर ध्यान
- ⑩ धरिजन और संघ (1932) फेडरेशन
- ⑪ अखंड वर्ण को चारिज
- ⑫ धरिजन शब्द चारिज
- ⑬ कानूनी व रा.0 उपायों के
- ⑭ स्वतंत्र रा.0 आवाज
- ⑮ संवेधानिक अधिकार पर ध्यान
- ⑯ कानूनी सुस्था उपाय, संवेधानिक अधिकार पर ध्यान
- ⑰ धर्म में परिवर्तन
- ⑱ पूना पैक्ट को दबाव के रूप में देखा।
- ⑲ संवेधानिक समानता
- ⑳ शोधपूर्ण चरित्र

⑥ आत्मपूजा, अस्पृश्यता ⑦ जाति का उन्मूलन पर भाषण

चुनाव में कांग्रेस का प्रदर्शन (1935-39)

- ① भारत सरकार अधिनियम 1935
 - (i) प्रांतीय स्वायत्तता
 - (ii) प्रिंसिपलीय विधायिकाएँ
 - (iii) प्रांतीय विधानसभाओं के लिए चुनाव
 - (iv) राजपाल ने बीटी शक्ति अपने पास रखी कांग्रेस में आंतरिक विभाजन

- ② कांग्रेस के भीतर बंटवारा
 - (i) राजेंद्र प्रसाद व सरदार पटेल
 - (ii) जवाहरलाल नेहरू शुरू में अनिच्छुक मंत्रालयों में बिना भुजा कार्य (1937-39)

- ③ 11 प्रांतों में से 5 प्रांतों में कांग्रेस की बहुमत
- ④ 13% आबादी ने मतदान

सुधार

- ① कृषि सुधार → जंगल भूमि, राजस्व ↓
 - ↳ जंगल-मालास में वास्तविक सुधार
- ② नागरिक सुविधा → सर्वोच्च सुरक्षा अधिनियम (कॉर्पोरेशन, मालास), शहरी क्षेत्रों को विद्युत बिजली मिला
- ③ शिक्षा व स्वास्थ्य सुधार → प्राथमिक शिक्षा का विस्तार
 - ↳ हरिजन कल्याण, निवृत्त सेवा में ध्यान
- ④ भूमि व कामिकों के अधिकार
 - ↳ 8 घंटे के कार्य दिवस की व्यवस्था
- ⑤ महिला अधिकार → शिक्षा
 - ↳ पैरानिरोधी अभियान

उपाय

- (i) मालास में 0. राजगोपालाचारी ने हिंदी को बढ़ावा
- (ii) U.P में गोबिंद वल्लभ पंत ने श्रमिक समर्थक कानून
- (iii) कोलकाता में B.C. जोर ने कुराहट व सहायता जोती मंत्रालय कार्य में लाया

- (i) गवर्नर का दस्तक
- (ii) सांप्रदायिक तनाव (लीग की पीछे रिपोर्ट 1938)
- (iii) आंतरिक कांग्रेस संघर्ष
- (iv) शशासनिक अनुभवहीनता

चरण का अंत (1939): मंत्रालयों का त्याग-पत्र
कांग्रेस मंत्रिमंडली ने त्याग-पत्र पेश किया

- (i) अलाहाबाद के सिना भारत को द्वितीय विश्व युद्ध
- (ii) युद्ध के बाद स्पष्ट स्वतंत्रता की मांग → अंग्रेजों ने इनकार कर दिया।

त्याग-पत्र का महत्व
(i) संविधानिकता से दूरता
(ii) शहरी शून्यता उत्पन्न → लोगों ने गुस्से में
(iii) भारत छोड़ो आंदोलन (1942) → शहरी कट्टीकरण
अगस्त प्रस्ताव (1940)

पृष्ठभूमि
(i) II विश्व युद्ध में फिट्टेन की भारतीय समर्थन की आवश्यकता
(ii) जकारन युद्ध में प्रवेश

शुद्ध प्रस्ताव
(i) डोमिनियन स्टेट्स
(ii) भारतीयों को → वायसराय की कार्यवाही परिषद का विस्तार
(iii) संवि. निर्माता संस्था
↳ भारतीय द्वारा संविधान का निर्माण
↳ अल्पसंख्यकों की सहमति आवश्यक
(iv) अल्पसंख्यकों व दलित वर्गों की सुरक्षा का आश्वासन

महत्व
(i) पहली बार संवि. निर्माण का अधिकार
(ii) कांग्रेस व मुस्लिम लीग के बीच विभाजन गहरा
(iii) राष्ट्रीयता के मांगों द्वारा करने में विफल के कारण व्यक्तिगत सत्याग्रह

व्यक्तिगत सत्याग्रह (1940-41)

पृष्ठभूमि → II विश्व युद्ध में भारत की आजीविका की घोषणा कर दी

उद्देश्य
(i) जकारन युद्ध में आजीविका
(ii) उपनिवेशवाद के विरोधी रूप
विशेषताएँ

- (i) 1700 से 1940 की गांधी द्वारा प्रारंभ
- (ii) अनिवार्य व्यक्ति द्वारा अहिंसक, प्रतीकात्मक
- (iii) पहले सत्याग्रही → बिनोबा भावे

महत्व
(i) युद्ध के प्रति प्रतिबिंब विरोध
(ii) अनुशासित सत्याग्रह का प्रदर्शन
(iii) भारत छोड़ो आंदोलन (1942) का अग्रदूत
(iv) संकुचित उपनिवेशवाद-विरोध व फासीवाद विरोध
ब्रिक्स मिशन (मार्च 1942)

पृष्ठभूमि
(i) II विश्व युद्ध एक निर्णायक मोड़ पर (जापान का भारत की ओर बढ़ना)

- (i) अंग्रेजी के पूर्ण भारतीय समर्थन की आवश्यकता
- (ii) अमेरिका, चीन व भारतीय राष्ट्रवादियों का पक्ष
- (iii) सर स्टैफोर्ड क्रिस्स के भारतीय नेताओं के वातचीत के लिए भेजा

मुख्य प्रस्ताव

- (i) मुक्त के बाद भारत के लिए डेमोक्रेटिक स्टेट्स
- (ii) संवि. सभा का गठन
 - ५ प्रांतीय विधानसभाओं द्वारा निर्वाचित
 - ५ प्रिासते नामांकित व्यक्ति अंग्रेजी की
- (iii) प्रांतों पर विधानसभाओं से बाहर रह सक्ती है
- (iv) मुक्त के दौरान ब्रिटिश रक्षा नियंत्रण परकार
- (v) भारतीय कार्यपरिषद में शामिल, रक्षा व ब्रिटिश कांग्रेस की प्रतिनिधित्व अस्वीकार

प्रतिभाजन वाता प्रस्ताव अस्वीकार
 मुस्लिम लीग ने भी अस्वीकार

महत्व

- (i) मिशन असफल रहा
- (ii) भारत छोड़ो आंदोलन (अगस्त 1942) में प्रारंभ
- (iii) पक्षी वार विभाजन का अग्रपक्ष रूप से स्वीकार

13. अंतिम चरण-स्वतंत्रता का मार्ग

भारत छोड़ो आंदोलन (8 अगस्त 1942)

प्रवृत्तियाँ

1. क्रिस्स मिशन की विफलता
2. महा विश्व मुक्त का प्रभाव
3. बढ़ती राष्ट्रवादी भावना
4. ब्रिटिश शासकों से मोड़कना
- अल्प आंदोलनों से चिंतनता
1. पूर्ण स्वतंत्रता की मांग
2. बिना तैयारी के सामूहिक विद्रोह
3. गांधीजी ने करो या मरो
4. नेतृत्व का अभाव
5. व्यापक आगीदारी → अकाला असफल अली
6. हिंसा व तोड़फोड़
7. समानांतर सरकारी का गठन कांग्रेस
8. व्यापक पड़ुँच → उषा मेहता → सीस्ट्री रिजो
- समानांतर सरकारी

1. कलिका (अगस्त 1942) → पिट्टुपांडे
2. तमलुक (1942-44) → सीरीश चंद्र सांगत

3. सारा (1943-46) → नाना पटेल
4. तलचेंबर → ओडिशा में प्रभाव

1. व्यापक अशान्ति
2. भूमिगत नेतृत्व का उदय
3. सत्ता हस्तांतरण की अनिवार्यता का एहसास
4. उद्बोद्धत वार्ता के लिए मंच तैयार
5. राष्ट्रवादी भावना से प्रज्ज्वल किया
6. INA व जोय के प्रयासों के महत्वमिता

- ### विफलता
1. स्वाधीनता का तात्कालिक उद्देश्य प्राप्त नहीं
 2. समानांतर सरकारी अधिक समर्थन नहीं मिली
 3. जन एवता का अभाव → ML, हिंदू महासभा
 4. गांधी सरकारी पक्ष में प्रभाव → लोग गिरफ्तार
 5. संगठित योजना का अभाव

भारतीय राष्ट्रीय सेना (INA)

- ### उद्देश्य
1. सशस्त्र संघर्ष द्वारा भारत की पूर्ण स्वतंत्रता
 2. धर्म, रंग व लिंग के आधार पर भारतीयों को विभुत करना
 3. ब्रिटिश औपनिवेशिक शासन की समाप्ति
 4. स्वतंत्रता संग्राम में महिलाओं की सशक्त
 5. अंतर्राष्ट्रीय समर्थन → जर्मनी → जापान
 6. हर स्वतंत्र, धर्मनिरपेक्ष व आधुनिक भारत की स्थापना

- ### महत्व
1. ब्रिटिश शासन की सशक्त चुनौती
 2. ब्रिटिश धारणा में बदलाव
 3. सशस्त्र क्रांती में विप्लव का चरण
 4. राष्ट्रवादी प्रतीक
 5. INA प्रतीक के दौरान सार्व. समर्थन
 6. महिलाओं की आगीदारी → सांसी रेजिमेंट भीमारे

1. जापान पर निर्भरता
2. सीमित सैन्य सफलता
3. कम साज्जाखत व संसाधन
4. हर सहयोगी क्षत्र के रूप में माना जाता है
5. गतिविधियों की कमी अवधि
6. कुजाछ चंद्र बोस की मृत्यु (1945)
7. INA दायत (1945-46)
- प्रशासनवाजधान, बिल्वा व सहायन → रॉटि माशति

वेबेल योजना

विशेषताएँ

- (i) वायसरॉय की कार्यकारी परिषद
- (ii) जाति हिंदुओं व मुसलमानों → समान प्रतिनिधित्व
- (iii) गवर्नर - जनरल मंत्रिस्तरीय सलाह
- (iv) विभिन्न वर्गों के प्रतिनिधि परिषद नामांकन
- शिमला सम्मेलन → लॉर्ड वेबेल
- 125 जून, 1945 से वेबेल योजना
- मुस्लिम लीग का रुज

→ सभी मुस्लिम सदस्य मुस्लिम लीग द्वारा नामांकित कांग्रेस का रुज

→ विरुद्ध रूप से जातीय हिंदू पार्टी शिमला सम्मेलन का प्रभाव

- ① आम सहमति तक पहुँचने में विफलता
- ② राष्ट्रीय सांप्रदायिक विभाजन उजागर हुए
- ③ अंतरिम सरकारी योजना को खटका
- ④ प्रत्यक्ष कार्यवाई दिवस का मार्ग प्रशस्त
- ⑤ अंग्रेजों द्वारा मुस्लिम लीग का तुष्टीकरण

रॉयल इंडियन नैवी (RIN) विद्रोह - 1946

कारण

- ① प्रशन्न परिस्थितियों से प्रेरित
- ② नस्लीय भेदभाव
- ③ बेहती वायुद्वारा आवेनाओं से प्रेरित विद्रोह का क्रम

- (i) जय हिंद, इंकलाब जिंदावाद के नारे लगाए
 - (ii) जेथर में आम दड़तात सहित नागरिक समर्थन
 - (iii) मांग → समान अधिकार, बेहतर भोजन
- विद्रोह का अंत

- (i) सैन्य विद्रोह का पतन
- (ii) राष्ट्रव्यापी विद्रोह
- (iii) व्यापक नागरिक समर्थन
- (iv) राठ सीमाओं के पार एकता
- (v) ब्रिटिश सपना व शत्रु
- (vi) वापसी के लिए आग्रह किया

1945-46 चुनाव

पाकिस्तान विभाजन की मांग की वृत्ति

- (i) शिमला के सम्मेलन के बाद → ब्रिटेन में लेबर पार्टी
- (ii) पाकिस्तान पर लीग का फौवस
- (iii) व्यापक लागवटी → उल्लेख, पीर, सज्जाद शाही

(iv) कांग्रेस का अभिमान

(v) कांग्रेस का गलत निर्णय

(vi) मुस्लिम लीग की सफलता

(vii) चुनाव के बाद का एहसास

मुस्लिम सीटों के लिए कांग्रेस की रणनीति
(1945-46) चुनाव

- ① कांग्रेस में आंतरिक विभाजन
→ मोलाना आजाद
→ नेहरू, पटेल
- ② विचार मामला → कुल चुनाव निधि का 34 हिस्सा खर्च
- ③ चुनावों में कांग्रेस, लीग की व्यापक अपील का मुकाबला नहीं कर सकी
- ④ परिणाम → कांग्रेस का आंतरिक आशावाद फीका पड़ गया
→ लीग मुस्लिम सीटों पर हावी हो जा रही
- ⑤ चुनाव परिणाम
→ कुल सीटें → 102
→ कांग्रेस → 57
→ ML → 30
→ 1937 में 48% की तुलना में 76% मुस्लिम वोट लीग के मिले

14. राज पर अंतिम परदा : अंग्रेजों की बाहर निकलने की योजना

कैबिनेट मिशन प्रस्ताव (1946)

- ① पाकिस्तान की अस्वीकृति
- ② विस्तरीय सरकार → संघ, प्रांतों, प्रांतों के समूह
- ③ प्रांतीय समूहन : प्रांतों को → A, B, C
→ A → हिंदू-बहुल प्रांत
→ B, C → मुस्लिम-बहुल प्रांत
- ④ संवि. सभा (389 सदस्य)
→ अनुपातिक प्रतिनिधित्व
- ⑤ स्वायत्तता व संसद्भुता
- ⑥ रिपॉसित → ब्रिटिश संतोच्चता से गुबरन
- ⑦ अंतिम अंतरिम सरकार → सभी मंत्रिज
राठ वर्गों का समर्थन
कैबिनेट मिशन योजना - समूहीकरण पंड
व परिणाम
संग्रह की व्यापक

- (i) एक्स सेंसि. वें कारण न लीग का सिरोह
- (ii) बांध आधार पर प्रांतों के समूहीकरण का सिरोह
- (iii) अविचार्य समूहीकरण न प्रांतीय स्वायत्तता का उत्पन्न
- (iv) रिपारती से निवर्चित प्रतिनिधित्व की रमी की आलोचना

ML से व्याख्या

- (i) अविचार्य समूहीकरण का कण
- (ii) समूह B व C को मुस्लिम संख्याओं के रूप में विवरित

विचार

- (i) 6 जून 1946 न ML के योजना स्वीकार की
- (ii) 24 जून न कांग्रेस ने स्वीकार
- (iii) जुलाई 1946 न संवि. सभा के लिए चुनाव
- (iv) 10 जुलाई न नेहरू न संवि. सभा संमेलन
- (v) 29 जुलाई न लीग योजना से हट गई
- (vi) 16 अगस्त न मल्लिकारजुन धर बारबार् दिवस की

रेविनेट मिशन की विफलता

- 1 समूहीकरण में असफलता
- 2 विरोधी उद्देश्य न बांध-आधारित समूहों के विचार
- 3 नेहरू का वक्तव्य न संवि. सभा संमेलन
- 4 सांप्रदायिक तनाव व मल्लिकारजुन धर बारबार्
- 5 ब्रिटिश पुनर्विचार
- 6 आंतरिक सरकार व लीग की अविचार्य
 - 5 ब्रिटिश पक्ष में 25000 से लीग शामिल
 - 5 लियार अली खान के लीड में कांग्रेस गठबंधन वाले मुंजीपतियों की असमर्थता दिया
 - 5 गांधी ने दो असंगतताओं वाले गठबंधन के विचार्य चलावनी की
 - 5 लीग में रेविनेट मिशन योजना के दीर्घकालिक लक्ष्य को अस्वीकार करते हुए संवि. सभा में शामिल होने से इंकार दिया।

इटली का वक्तव्य (फरवरी 20, 1947)

- (i) मुस्लिम बहुमत क्षेत्र संवि. सभा में शामिल नहीं
- (ii) रिपारती ब्रिटिश सरकार के अधीन नहीं
- (iii) वेंचन के स्थान पर गाउटवर्टन वापस लाने का प्रस्ताव की प्रतिज्ञा
- (iv) एब से अधिक बेंद्रों की सत्ता हस्तांतरण का प्रस्ताव कांग्रेस की स्वीकार्य था

बांध में पंजाब व बंगाल पाक में शामिल गाउटवर्टन योजना (3 जून, 1947)

- (i) सिक्की मत न बंगाल व पंजाब विभाजन
- (ii) सिंध स्वतंत्र गिजि, NWFP व सिलेट में जनमत संग्रह
- (iii) दो गणराज्य (भारत-पाक)
- (iv) रिपारती न भारत का पाक में शामिल होगी कांग्रेस ने एकीकृत भारत के स्वीकार पर लियार, वसतिर उभरे अन्य सभी सिंधु पर ही जाहजों जो निम्न हैं

- (i) रिपारती की आजादी न भारत शामिल
 - (ii) बंगाल की स्वतंत्रता पारिज
 - (iii) ईदराबाद ने पाक में वित्त पारिज दिया
 - (iv) सीमा आयोग की स्थापना
- भारतीय स्वतंत्रता अधि० (5 जुलाई 1947)

- (i) भारत-पाक का वैध विभाजन व निर्माण
 - (ii) ब्रिटिश निजता व इंडीय विधायिका से भंग
 - (iii) निगरानी के लिए गवर्नर-जनरल, 1935 का अधि० नए संवि. बनने तक रहेगा
- भारतीय स्वतंत्रता की घोषणा करने में ब्रिटिश जल्दबाजी का कारण

- 1 बहुत जन आंदोलन व असंतोष
- 2 प्रशासनिक दुर्बलता
- 3 आंध्र व सैन्धु समझौता
- 4 अंतराष्ट्रीय दबाव
- 5 रेविनेट मिशन योजना की विफलता
- 6 मुस्लिम लीग की मल्लिकारजुन धर बारबार्
- 7 लीग की बढ़ती ताकत
- 8 लेबर पार्टी की नीति

15. विविध

भारतीय राष्ट्रीय आंदोलन में सांप्रदायिकता का उदय

समयावध

- 1 1857 न लडाख व गोर लडाख जिलों का विभाजन
- 2 1903 न गोरखा देश
- 3 1905 न बंगाल का विभाजन

- ① 1906 → अत्ता रा० प्रतिनिधित्व की भांग
- ② 1909 → गाँधी भिंदो सुधार
- ③ 1915-16 → हिंदू रा० हिंदू की वसंत
- ④ 1921 → गांधी विद्रोह
- ⑤ 1932 → एमरो में एरोनाल्ड द्वारा सांप्रदायिक
- ⑥ 1940 → मल की पाठ की भांग
- ⑦ 1946-47 → प्रत्यक्ष सार्वभौमिक दिवस

कारण

- ① फूट डालो राज करो की ब्रिटिश नीतियाँ
- ② सांप्रदायिक इतिहास लेखन → जेम्स मिल
- ③ धा० संगठन → हिंदू महासभा, मल
- ④ सभी समुदायों का प्रतिनिधित्व करने में कांग्रेस की विफलता
- ⑤ रा० अवसरवादिता
- ⑥ आ० व सा० धारक
- ⑦ धा० आंदोलन → हिंदू आंदोलन व दक्षिणी आंदोलन

प्रभाव

- ① राष्ट्रीय एकाता का वमजार होना
- ② आंदोलन में वम भागीदारी
- ③ देश का विभाजन
- ④ सांप्रदायिक हिंसा
- ⑤ बड़े पैमाने पर विस्थापन

भारतीय राष्ट्रीय आंदोलन में विदेशियों की भूमिका

- ① एनी बेसेंट → स्वशासन की वसंत
- ② चार्ल्स फ्रीर एंड्रयूज → चंपारण व अहमदाबाद आंदोलन में मध्यस्थता
- ③ गीराबन (गेडलीन स्नेड) → गांधी का संदेश फैलाने में
- ④ सैमुअल स्टोक्स → उमराठ में किसानों के साथ
- ⑤ विक्टर निवेदिता (मार्गरेट बोणल) → अखिल भारतीय आंदोलन में शामिल
- ⑥ बिस्मिल वेडरबर्न → कांग्रेस की सहस्थापना 1885
- ⑦ हेनरी बॉटन → कांग्रेस में शामिल हुए
- ⑧ ए.ओ. ह्यूमन → कांग्रेस की स्थापना
- ⑨ पी.जी. हॉर्निमन → प्रस के माध्यम से जनमत का निर्माण, होमरूल आंदोलन का समर्थन

महिलाओं की भूमिका

- ① बिद्रोह का नेतृत्व → रानी लक्ष्मीबाई, सातवारीबाई
- ② कानूनी सुधार की वसंत → पंडिता रामाबाई
- ③ आंदोलन में सहभागिता → सरला देवी चौधरानी
- ④ होमरूल आंदोलन → एनी बेसेंट
- ⑤ समाज सुधारक → मार्गरेट बजिन
- ⑥ गांधीवादी स्वतंत्रता संग्राम व समर्थन → कस्तूरबा गांधी
- ⑦ प्रांतिवारी संविज्ञान → प्रीतिता वादेदार
- ⑧ धरासाठा स्वतंत्रता संग्राम → सरोजिनी नायडू
- ⑨ स्वदेशी का प्रचार → वसंत देवी चट्टोपाध्याय
- ⑩ भारतीय राष्ट्रीय दल का फहरावा → अरुणा आसफ अली
- ⑪ भूमिगत रजिस्ट्रार सेवा → ऊषा मेहता
- ⑫ सशस्त्र प्रतिलोचन का नेतृत्व → लक्ष्मी सहगल
- ⑬ रा० नेतृत्व प्रदान → सरोजिनी नायडू

महिलाओं के समर्थन चुनौतियाँ

- ① परिवारों व समुदायों का विरोध
- ② धन व हिंसा का जोखिम
- ③ शिक्षा व कृषि तब सीमित पहुँच
- ④ आंदोलनों के भीतर दक्षिणावर्त
- ⑤ दोहरा बोझ
- ⑥ जाति व वर्ग बाधाएँ
- ⑦ अक्षरकृता व प्रतीकवाद

स्वतंत्रता संग्राम के दौरान वैचारिक धाराएँ

- ① गांधीवादी → स्वतंत्रता, अहिंसा
- ② समाजवादी → कृषि प्रांति (1917)
- ③ कट्टरपंथी प्रांतिवारी → समाजवादी आदर्शों से
- ④ सांप्रदायिक एवं धार्मिक विचारधाराएँ
- ⑤ हिंदू महासभा व मल
- ⑥ विशिष्ट धा० व धार्मिक समुदाय
- ⑦ जनजातीय व दक्षिण पर रहने वाली समूह
- ⑧ किसान → उचित धरादान, भूमि अधिभार
- ⑨ धर्म → सा० व्याप, समानता, सह प्रतिनिधित्व
- ⑩ महिला → सशक्तिकरण, औपनिवेशिक शासन व प्रतिकूलता का संरचना

भूमि आंदोलन

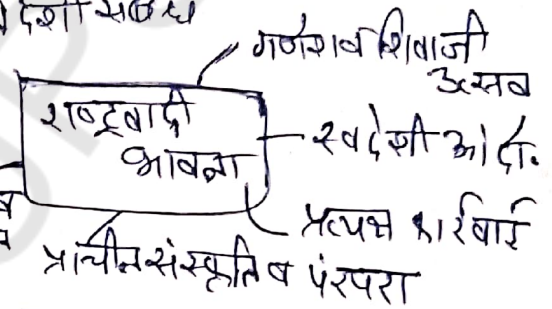
- ① प्रारम्भिक चरण (पूर्व-1918) → चेतना का उद्भव
- ② डॉ. जे. मिर्चेंडू (सोसियल) (1890)
- ③ राम व धर्म, धर्म, स्वतंत्रता

Templates — MH

- ① XYZ शक्ति का भारत में पोगदान
 - सांस्कृतिक - धातु
 - शां
 - राज्य प्रशासनिक
 - आं
- ② XYZ शक्ति का पतन
 - विदेशी शक्ति का उभरना
 - आंतरिक शक्ति का प्रभावित होना (धर्म, संस्कृति)
 - आंतरिक गतिविधियाँ (अध्ययन)
- ③ संप्रभु शक्ति अपने आप ही कैसे संरक्षण करे
 - कर/प्राधान्य
 - भूमि
 - उच्च
 - विदेशी संबंध

④ Keyword & Ex.

MAP → उदा० से ही Point करना आ

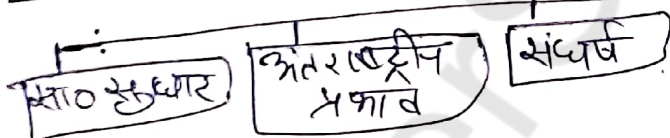
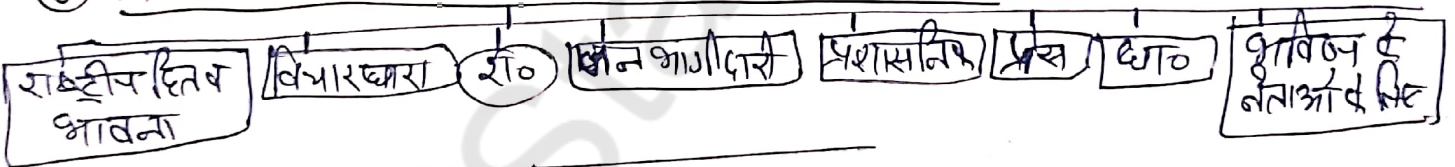


⑤ धारणा या प्रभाव किसी Event के

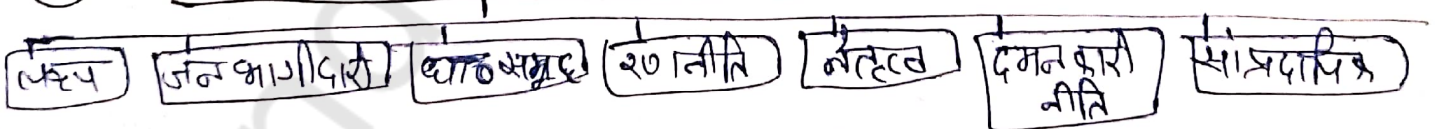
National Event

रां आं अंतराष्ट्रीय नीतियाँ राष्ट्रीय छि

⑥ किसी संगठन या आंदोलन में नेता का महत्व



⑦ किसी आंदोलन या संगठन की सीमा



⑧ अंतर लेखन में Format का ध्यान रखें



→ निरवर्ण आधुनिक भारत में → तात्कालिक प्रभाव, दीर्घकालिक प्रभाव, अनुपपन्न

⑨ 'How far' → Demand सिर्जना, प्रश्न में और क्या है वांछित

'Result' → + व - का सिर्जना

